अहिंसा, आगम और विज्ञान से आलोकित श्रेष्ठतम पत्रिका

भाव विज्ञान

BHAV VIGYAN

भोपाल में दीक्षार्थियों पर संस्कार देते हुए आ.श्री आर्जवसागरजी महाराज

वीर निर्वाण संवत् - 2545
अश्विन शुक्ल, वि.सं. 2076, सितंबर 2019

अंक : उनंचास

वर्ष : तेरह

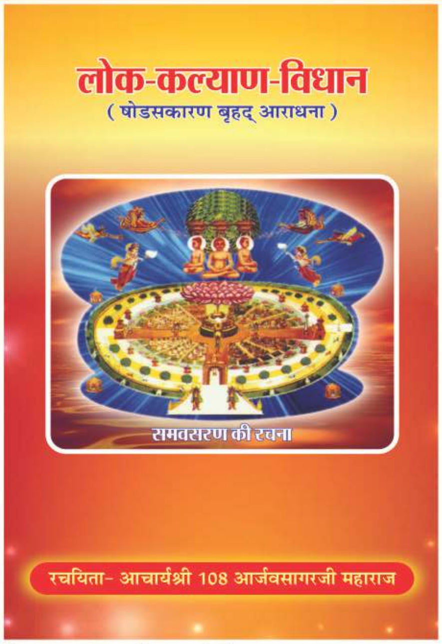

नवीन

साहित्य

उपलब्ध

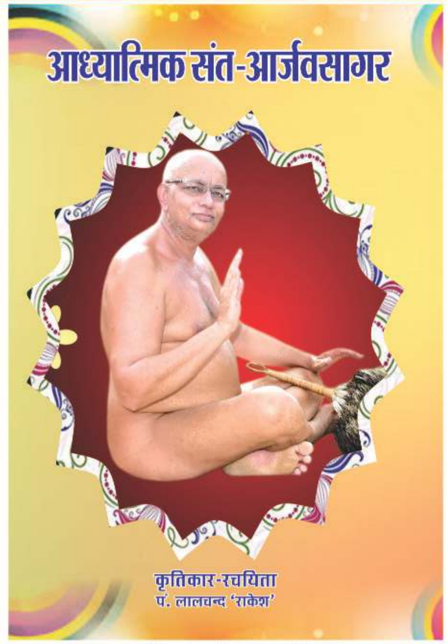

लोक-कल्याण-विधान (षोडसकारण बृहद् आराधना)
आचार्यश्री आर्जवसागर द्वारा विरचित
पृष्ठ सं. 188, पुनः प्रकाशन सहयोग राशि 60/-

आध्यात्मिक संत-आर्जवसागर
पंडित लालचन्दजी 'राकेश' द्वारा विरचित
पृष्ठ सं. 333, पुनः प्रकाशन सहयोग राशि 110/-

आचार्यश्री आर्जवसागर विरचित एवं भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित पर्यूषण पीयूष।

गुरुपूर्णिमा के दिन आचार्यश्री आर्जवसागरजी
का पाद प्रक्षालन करते हुए विनोद जैन अजमेर।

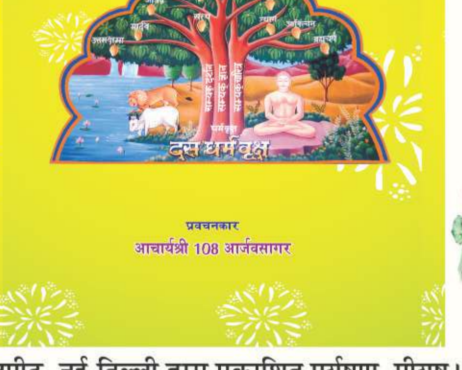

आ.श्री आर्जवसागर विरचित 'लोक-कल्याण-विधान''
का विमोचन करते हुए सपत्निक डॉ. अजित जैन एवं प्रो. सुधीर जैन

आशीर्वाद व प्रेरणा
संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित
आचार्यश्री 108 आर्जवसागर जी महाराज ।

रजिस्ट्रेशन क्रं. MPHIN/2007/27127

त्रैमासिक
भाव विज्ञान
(BHAV VIGYAN)

वर्ष-तेरह
अंक - उनंचास

● परामर्शदाता ●
प्राचार्य डॉ. शीतलचंद जैन, जयपुर
मो. 9414783707, 8505070927

। सम्पादक ।
डॉ. अजित कुमार जैन,
MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स,
कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003
मो. : 7222963457, व्हाट्सएपः 9425601161
email : bhav.vigyan@gmail.com

● प्रबंध सम्पादक ●
डॉ. सुधीर जैन, प्राध्यापक
85, डी.के. काटेज, ई-8 एक्सटेंशन, अरेरा कालोनी,
भोपाल मो. 9425011357

● सम्पादक मंडल ●
पं. जय कुमार 'निशांत', टीकमगढ़ (म.प्र.)
डॉ. संजय जैन (एडवोकेट), इंदौर (म.प्र.)
डॉ. श्रीमती अल्पना जैन (मोदी), ग्वालियर (म.प्र.)
इंजी. महेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
श्री सुनील वेजीटेरियन, दमोह (म.प्र.)

● कविता संकलन ●
पं. लालचंद जैन 'राकेश', भोपाल

● प्रकाशक ●
श्रीमती सुषमा जैन धर्मपत्नी डॉ. अजित जैन
MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा
सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 मो.: 7024373841
email : bhav.vigyan@yahoo.co.in

● आजीवन सदस्यता शुल्क ●

शिरोमणी संरक्षक	:	50,000 से अधिक
पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक	:	24,500
परम संरक्षक	:	21,000
पुण्यार्जक संरक्षक	:	18,000
सम्मानीय संरक्षक	:	11,000
संरक्षक	:	5,100
विशेष सदस्य	:	3,100
आजीवन (स्थायी)सदस्यता	:	1,500

कृपया सदस्यता शुल्क प्रकाशक के एवं रचनाएँ प्रबंध सम्पादक के पते पर भेजें।

पल्लव दर्शिका

विषय वस्तु एवं लेखक **पृष्ठ**

1. धर्मात्मा अहिंसक सेवा-उपचार व्यवस्था समिति — 2
2. आगम-अनुयोग [प्रश्नोत्तर-प्रदीप] – आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज — 4
3. सम्यग्ज्ञान-भूषण व सिद्धान्त-भूषण पद हेतु त्रैमासिक धार्मिक प्रश्न-पत्र एवं नियमावली — 14
4. संघस्थ मुनि परिचय — 16
5. पौराणिक संस्कृति – श्री नाथूलालजी जैन शास्त्री — 18
6. नियत और अनियत – आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज — 32
7. पं.श्री मूलचंद लुहाड़िया – सम्पादकीय/संकलन श्री अतुल जैन — 34
8. भजन – इंजीनियर बहिन ऋषिका जैन — 36
9. दिवाली – श्री हनुमान सिंह गुर्जर — 38
10. समाचार — 39

लेखक एवं विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
भाव विज्ञान से संबंधित समस्त निर्णयों/न्यायों के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल ही मान्य होगा।

धर्मात्मा अहिंसक सेवा-उपचार व्यवस्था समिति का गठन सम्पन्न

पावन वर्षायोग 2019 अशोकागार्डन भोपाल में धर्म प्रभावक आचार्यश्री 108 आर्जवसागर जी ससंघ के मंगल सान्निध्य में सितम्बर माह के रविवारीय बैठकों के दौरान गुरुवर के आशीर्वाद एवं प्रेरणा से एक निःस्वार्थ रूप धर्मात्मा अहिंसक सेवा-उपचार व्यवस्था समिति का गठन किया गया जिस समिति में लगभग उन्नीस डाक्टर्स लोगों ने इस सेवा में अपने अमूल्य समय का सहयोग देने का संकल्प लिया।

ऐसी उत्तम समिति का उद्देश्य केवल मोक्षमार्ग पर चल रहे त्यागी व्रतियों को मुख्य रूप से स्वास्थ्य वर्धन हेतु समय दान की भावना को वृद्धिंगत करना रहेगा। उद्देश्य के तौर पर प्रतिवर्ष आचार्यश्री आर्जवसागरजी के सान्निध्य में समय निश्चित किये जाने पर निःशुल्क सामूहिक सेमीनार या सामूहिक उपचार केम्प लगाने का कार्यक्रम भी संकल्पित किया गया। किसी व्रती द्वारा परोक्ष में भी सम्पर्क किये जाने पर उसे योग्य उपचार के बिन्दु और उपचार की सामग्री के सम्बंध में सुयोग्य मार्ग-दर्शन देने का भी सुनिश्चय किया गया।

समिति के प्रधान डॉ. अरविन्द जैन बी.ए.एम.एस. भोपाल, उपप्रधान डॉ. गजेन्द्र कुमार जैन एम.डी. (आयुर्वेद) इन्दौर, सचिव डॉ. राजदीप जैन एम.बी.बी.एस. एम.एस. (नेत्र विशेषज्ञ), सतना, कोषप्रधान डॉ. जयदीप जैन (मोनू) बी.फार्मा, एम.फार्मा भोपाल, और उपप्रधान डॉ. शैलेष जैन एम.डी. (आयुर्वेद) भोपाल, उपप्रधान डॉ. धन्य कुमार जैन आयुर्वेदाचार्य, उपप्रधान डॉ. मनोज जैन, बी.ए.एम.एस. भोपाल, मनोनीत हुए तथा सदस्य रूप में ब्र.डॉ. राजकुमार जैन बी.ए.एम.एस. (राहतगढ़ वाले) आचार्य संघस्थ, डॉ. श्रीमती अँजली जैन एम.डी. (आयुर्वेद) भोपाल, डॉ.श्रीमती रूबी जैन भोपाल, डॉ.श्रीमती श्वेता जैन बी.ए.एम.एस.; एम.एस. (शलाक्य) सतना, डॉ. आशीष जैन बी.एच.एम.एस. डी.फार्मा भोपाल, डॉ. संकेत जैन एम.डी. सूरत, डॉ. पल्लवी जैन बी.ए.एम.एस. भोपाल, डॉ. प्रसन्नकुमार जैन बी.आई.एम.एस. भोपाल, डॉ. सलिल जैन एम.डी. पीएच.डी. भोपाल, डॉ. आकाश जैन भोपाल, डॉ. निर्मल जैन एम.बी.बी.एस. बी.पी.एम. मनोचिकित्सक रतलाम, डॉ. राजेश जैन एम.बी.बी.एस. डी.टी.सी.डी. एफ. आर.एस.एच. रतलाम इस तरह सभी इस धार्मिक सेवा हेतु समर्पित हुए।

आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज की प्रेरणा से अहिंसक चिकित्सा हेतु नये साहित्य के निर्माण करने हेतु निम्नलिखित विषयों पर देशी औषधियों के आधार पर एक-एक पुस्तक लिखने कार्य छः डॉक्टर्स लोगों को सौपा गया जिन पुस्तकों में किसी अभक्ष वस्तु (मद्य, मधु, मांस, जीवों के शरीर, पंचउदुम्बरों तथा जमीकंदादि) का वर्णन नहीं होगा। जिन विषयों पर जिन डाक्टर्स लोगों को गुरु आशीष मिला उनके नाम इस तरह हैं-

1. चिरजीवन चिकित्सा विज्ञान– ब्र. डॉ. राजकुमार जैन बी.ए.एमएस.
2. परोपकार आयुर्विज्ञान– डॉ. अरविंद जैन बी.ए.एम.एस
3. अहिंसक स्वास्थ्य लाभ पद्धति– डॉ. अंजली जैन एम.डी.
4. औषध विज्ञान व अहिंसक उपचार– डॉ. शैलेष जैन एम.डी.
5. अहिंसक चिकित्सा से स्वास्थ्य व आध्यात्मिक लाभ– डॉ. श्वेता जैन बी.ए.एम. एस.एम.एस.
6. सेवनीय अहिंसक आयुर्वेदिक औषधोपचार– डॉ. सलिल जैन एम.डी. पीएच.डी.

चिकित्सा में सहयोगी बनने या अहिंसक चिकित्सा पद्धति का ज्ञान करने हेतु पोस्टल द्वारा प्रश्नोत्तरी शैली का उपक्रम भी इस समिति के उद्देश्यों में शामिल किया गया जिसे कुछ काल उपरान्त भाव-विज्ञान त्रैमासिक पत्रिका द्वारा प्रारम्भ करने का निर्णय लिया गया। जिन भव्यात्माओं को इस पुण्यकार्य में अपने बहुमूल्य समय का सदुपयोग कर सहयोग देने की पवित्र भावना हो वे अथवा प्रश्नोत्तरी में भाग लेने की उत्तम भावना व निम्नलिखित सम्पर्क सूत्रानुसार सम्पर्क अवश्ये कर सकते हैं।

सम्पर्क सूत्र– डॉ. मनोज जैन, भोपाल मो. 9827204372
डॉ. आशीष जैन, भोपाल मो. 9713895966
डॉ. राजदीप जैन, सतना मो. 9074784028

मोक्षमार्ग में सम्यक्चारित्र का स्थान है सर्वोपरि

-आचार्यश्री आजर्वसागरजी

आचार्य आर्जवसागरजी ने अपने प्रवचन में बतलाया कि चारित्र के बिना मोक्ष पथ सदा अधूरा होता है। दर्शन और ज्ञान की सार्थकता चारित्र के पालन में होती है। जैसे औषधि के श्रद्धान और ज्ञान मात्र से व्याधि दूर नहीं होती, औषधि का सेवन करना अनिवार्य होता है उसी तरह मुक्ति के श्रद्धान ज्ञान मात्र से उस मुक्ति को नहीं प्राप्त किया जा सकता, पाप क्रिया की निवृत्तिपूर्वक व्रताचरण रूप प्रवृत्ति से ही समीचीन व्यवहार चारित्र का पालन करते हुए एक दिन स्वरूपाचरण रूप मुनियों के निश्चय चारित्र द्वारा मुक्ति की प्राप्ति होना संभव है। अत: मोक्षमार्ग के क्षेत्र में कर्मों के संवर व निर्जरा हेतु व्रताचरण की प्रधानता बताते हुए सम्यक्चारित्र को शास्त्रों में अपूर्व महिमा स्वरूप बतलाया गया है।

साभार : आर्जव-वाणी

सम्यग्ज्ञान-भूषण एवं सिद्धांत-भूषण पदवी हेतु भाव-विज्ञान धार्मिक परीक्षा बोर्ड, भोपाल द्वारा स्वीकृत

आचार्यश्री आर्जवसागर विरचित

आगम-अनुयोग

[प्रश्नोत्तर-प्रदीप]

करणानुयोग

प्र. 405 करणानुयोग किसे कहते हैं?

उत्तर जिस अनुयोग में लोक अलोक का विभाग, गणित, जगत् का माप, लोक-रचना, जीवों का निवास, आयु उत्सेधादि, युग-परिवर्तन और प्ररूपणाओं का वर्णन होता उसे करणानुयोग कहते हैं।

प्र. 406 लोक और अलोक किसे कहते हैं?

उत्तर जहाँ जीव, पुद्गलादिक द्रव्य पाये (देखे) जाते हैं उसे लोक तथा जहाँ जीवादिक द्रव्य नहीं देखे जाते उसे अलोक कहते हैं।

प्र. 407 गणित में परिकर्माष्टक किन्हें कहते हैं?

उत्तर संकलन, व्यवकलन, गुणकार, भागहार, वर्ग, वर्गमूल, घन और घनमूल इन अष्ट प्रकारों को परिकर्माष्टक कहते हैं।

प्र. 408 संकलन क्या कहलाता है?

उत्तर लोक में संख्या को आपस में जोड़ना संकलन कहलाता है। जैसे- दो और दो चार होते हैं।

प्र. 409 व्यवकलन किसे बोलते हैं?

उत्तर लोक में जिसे घटाना या बाकी निकालना बोला जाता है उसे आगम भाषा में व्यवकलन बोलते हैं।

प्र. 410 गुणकार किसे कहते हैं?

उत्तर गुणा करने का नाम गुणकार होता है। जैसे- चार को दो से गुणा करने पर आठ होता है।

प्र. 411 भागहार क्या कहलाता है?

उत्तर भाग देने का नाम भागहार कहलाता है। जैसे- चार में दो का भाग देने से दो लब्ध प्राप्त होता है।

प्र. 412 वर्ग किसे कहते हैं?

उत्तर समान दो राशियों का परस्पर में गुणा करने का नाम वर्ग है। जैसे- दो को दो से गुणा करने चार होता है। इस तरह दो का वर्ग चार है। वर्ग का एकना कृति भी है।

प्र. 413 घन किसे कहते हैं?

उत्तर समान तीन राशियों को परस्पर में गुणा करने का नाम घन है। जैसे- चार को तीन जगह रखकर परस्पर गुणा करने से चौसठ होता है। तब चार का घन चौसठ हुआ।

प्र.414 वर्गमूल किसे कहते हैं?

उत्तर जिसका वर्ग करने से जो राशि उत्पन्न होती है उसे उस राशि का वर्गमूल कहा जाता है। जैसे-दो का वर्ग करने से चार राशि उत्पन्न होती है। तब दो यह संख्या चार का वर्गमूल कहलाता है।

प्र. 415 घनमूल किसे कहते हैं?

उत्तर जो राशि जिसका घन करने से उत्पन्न होती है उस राशि का वह घनमूल होता है। जैसे- चार का घन करने से चौसठ राशि उत्पन्न होती है, अत: चौसठ का घनमूल चार होता है।

प्र. 416 क्षेत्रफल किसे कहते हैं?

उत्तर लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई से जहाँ दो की विवक्षा हो, एक की न हो उसे प्रतर क्षेत्र या वर्ग रूप क्षेत्र कहते हैं और लम्बाई को चौड़ाई से गुणा करने पर जो फल आता है उसे क्षेत्रफल कहते हैं। जैसे- चार हाथ लम्बे और पाँच हाथ चौड़े क्षेत्र का क्षेत्रफल बीस हाथ होता है।

प्र. 417 घन क्षेत्रफल किसे कहते हैं?

उत्तर जहाँ लम्बाई, चौड़ाई और ऊँचाई तीनों की विवक्षा हो उसे घन क्षेत्र कहते हैं और उसके क्षेत्रफल को घन क्षेत्रफल या खातफल कहते हैं। जैसे- चार हाथ लम्बे, चार हाथ चौड़े और पाँच हाथ ऊँचे क्षेत्र का खात फल $4 \times 4 \times 5 = 80$ हाथ हुआ।

प्र. 418 व्यास या परिधि किसे कहते हैं?

उत्तर गोलाकार क्षेत्र के बीच में जितना विस्तार होता है उसे व्यास कहते हैं और गोलाकार क्षेत्र की गोलाई के प्रमाण को परिधि कहते हैं।

प्र. 419 परिधि और क्षेत्रफल का नियम क्या है?

उत्तर सामान्य रूप से व्यास से तिगुणी परिधि होती है और परिधि को व्यास की चौथाई से गुणा करने पर क्षेत्रफल होता है तथा क्षेत्रफल को ऊँचाई या गहराई से गुणा करने पर खातफल होता है।

प. 420 मान के कितने भेद हैं?

उत्तर मान के दो भेद हैं- लौकिक मान और लोकोत्तर मान।

प्र. 421 लौकिक मान किसे कहते हैं?

उत्तर लोक में प्रचलित मान को लौकिक मान कहा जाता है। उसके छ: भेद हैं- मान, उन्मान, अवमान, गणिमान, प्रतिमान और तत्प्रतिमान। अन्न-धान्य आदिक के माप करने के बरतनों आदिक को मान कहते हैं। तराजू को उन्मान कहते हैं। चुल्लू आदिक को अवमान कहते हैं। जैसे- एक चुल्लू जल इत्यादि। एक आदि को गणिमान कहते हैं। जैसे- एक, दो, तीन। गुंजा आदि को प्रतिमान कहते हैं। जैसे- रत्ती, मासा आदि। घोड़े की लम्बाई आदिक देखकर उसका मूल्य आँकना तत्प्रतिमान कहलाता है।

प्र. 422 लोकोत्तर मान के कितने भेद हैं?

उत्तर लोकोत्तर मान के चार भेद हैं- द्रव्यमान, क्षेत्रमान, कालमान और भावमान।

प्र. 423 द्रव्यमान जघन्य और उत्कृष्ट किस रूप में होता है?

उत्तर एक परमाणु जघन्य द्रव्यमान है और सर्व द्रव्यों का समूह उत्कृष्ट द्रव्यमान है।

प्र. 424 क्षेत्रमान जघन्य और उत्कृष्ट किस रूप में रहता है?

उत्तर एक प्रदेश जघन्य क्षेत्रमान है और समस्त आकाश उत्कृष्ट क्षेत्रमान है।

प्र. 425 कालमान जघन्य और उत्कृष्ट किस रूप में होता है?

उत्तर एक समय जघन्य कालमान है और सर्वकाल उत्कृष्टकालमान है।

प्र. 426 भावमान जघन्य और उत्कृष्ट रूप में किस तरह होता है?

उत्तर सूक्ष्म निगोदिया लब्ध्यपर्याप्तक जीव का पर्याय श्रुतज्ञान जघन्य भावमान है और केवलज्ञान उत्कृष्ट भावमान है।

प्र. 427 द्रव्यमान के कितने भेद होते हैं?

उत्तर द्रव्यमान के दो भेद होते हैं– संख्यामान और उपमामान।

प्र. 428 संख्यामान के कितने भेद हैं?

उत्तर संख्यामान के तीन भेद हैं– संख्यात, असंख्यात और अनन्त।

प्र. 429 संख्यात, असंख्यात और अनन्त के उदाहरण क्या है?

उत्तर जो संख्या पाँचों इन्द्रियों का विषय है वह संख्यात है। संख्यात के ऊपर जो संख्या अवधिज्ञान का विषय है वह असंख्यात है। तथा असंख्यात के ऊपर जो संख्या केवलज्ञान के विषय भाव को प्राप्त होती है वह अनन्त है।

प्र. 430 क्षय सहित या अन्त होने वाले (अर्धपुद्गल परिवर्तन) काल को भी अनन्त कहा जा सकता है क्या?

उत्तर हाँ! क्षय सहित होने वाला ऐसा काल इसलिए अनन्त (परीतानन्त) कहा जाता है क्योंकि छद्मस्थ जीवों के द्वारा उसका अन्त नहीं पाया जाता है।

प्र. 431 उपमामान के कितने भेद हैं?

उत्तर उपमामान के आठ भेद हैं– पल्य, सागर, सूच्यंगुल, प्रतरांगुल, घनांगुल, जगच्छ्रेणी, जगत्प्रतर और लोक।

प्र. 432 पल्य किसे कहते हैं?

उत्तर भूमि के गहरे गड्ढे को पल्य कहते हैं। उस पल्य के आधार से परिगणित काल को पल्य या पल्योपम कहा जाता है।

प्र. 433 पल्य यह संज्ञा कितने वर्षों की उपमा के लिए प्रयुक्त होती है?

उत्तर पल्य यह संज्ञा असंख्यात वर्ष के लिए प्रयुक्त होती है।

प्र. 434 असंख्यात वर्ष तक की संख्या तक पहुँचने के लिए कितनी संख्याओं को पार करना पड़ता है?

उत्तर असंख्यात तक पहुँचने के लिए समय आवलि आदि से लेकर अट्ट तक की संख्याओं को पार करना पड़ता है।

प्र. 435 समय किसे कहते हैं?

उत्तर मंदगति से एक परमाणु को आकाश के एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश तक जाने में जितना काल लगता है उसे समय कहते हैं। यह काल की इकाई (सबसे जघन्य अवस्था) है।

प्र. 436 आवली किसे कहते हैं?

उत्तर असंख्यात समयों की एक आवली कही जाती है।

प्र. 437 उच्छ्वास किसे कहते हैं?

उत्तर संख्यात आवलियों का एक उच्छ्वास होता है।

प्र. 438 स्तोक किसे कहते हैं?

उत्तर सात उच्छ्वासों का एक स्तोक होता है।

प्र. 439 लव किसे कहते हैं?

उत्तर सात स्तोकों का एक लव होता है।

प्र. 440 घड़ी (घटी) या नाली किसे कहते हैं?

उत्तर 38 1/2 लव (24 मिनट) की एक घड़ी होती है।

प्र. 441 मुहूर्त्त किसे कहते हैं?

उत्तर दो घड़ी का एक मुहूर्त्त होता है।

प्र. 442 अन्तर्मुहूर्त्त किसे कहते हैं?

उत्तर एक समय से ऊपर तथा मुहूर्त्त से एक समय न्यून को अन्तर्मुहूर्त्त कहते हैं।

प्र. 443 दिन-रात किसे कहते हैं?

उत्तर तीस मुहूर्त्त (24 घण्टों) का एक दिनरात होता है। इसे अहोरात्र भी कहते हैं।

प्र. 444 पक्ष किसे कहते हैं?

उत्तर पन्द्रह दिनरात का एक पक्ष होता है।

प्र. 445 माह किसे कहते हैं?

उत्तर दो पक्षों को एक माह या मास होता है।

प्र. 446 ऋतु किसे कहते हैं?

उत्तर दो माह की एक ऋतु होती है।

प्र. 447 अयन किसे कहते हैं?

उत्तर तीन ऋतुओं का एक अयन होता है या षण्मासिक एक अयन होता है।

प्र. 448 वर्ष किसे कहते हैं?

उत्तर दो अयनों का एक वर्ष होता है।

प्र. 449 युग किसे कहते हैं?

उत्तर पाँच वर्ष का एक युग होता है।

प्र. 450 पूर्वाङ्ग किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी लाख वर्षों का एक पूर्वाङ्ग होता है।

प्र. 451 पूर्व किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी लाख पूर्वाङ्गों का एक पूर्व होता है।

प्र. 452 पर्वाङ्ग किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी पूर्वों का एक पर्वाङ्ग होता है।

प्र. 453 पर्व किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी लाख पर्वाङ्गों का एक पर्व होता है।

प्र. 454 नयुताङ्ग किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी पर्वों का एक नयुताङ्ग होता है

प्र. 455 नयुत किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी लाख नयुताङ्गों का एक नयुत होता है।

प्र. 456 कुमुदाङ्ग किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी नयुतों का एक कुमुदाङ्ग होता है।

प्र. 457 कुमुद किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी लाख कुमुदाङ्गों का एक कुमुद होता है।

प्र. 458 पद्माङ्ग किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी कुमदों का एक पद्माङ्ग होता है।

प्र. 459 पद्म किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी लाख पद्माङ्गों का एक पद्म होता है।

प्र. 460 नलिनाङ्ग किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी पद्मों का एक नलिनाङ्ग होता है।

प्र. 461 नलिन किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी लाख नलिनाङ्गों का एक नलिन होता है।

प्र. 462 कमलाङ्ग किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी नलिनों का एक कमलाङ्ग होता है।

प्र. 463 कमल किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी लाख कमलाङ्गों का एक कमल होता है।

प्र. 464 त्रुटितांग किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी कमलों का एक त्रुटितांग होता है।

प्र. 465 त्रुटित किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी लाख त्रुटितांगों का एक त्रुटित होता है।

प्र. 466 अटटांग किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी त्रुटितों का एक अटटांग होता है।

प्र. 467 अटट किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी लाख अटटांगों का एक अटट होता है।

प्र. 468 अममांग किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी अटटों का एक अममांग होता है।

प्र. 469 अमम किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी लाख अममांगों का एक अमम होता है।

प्र. 470 हाहांग किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी अममों का एक हाहांग होता है।

प्र. 471 हाहा किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी लाख हाहांगों का एक हाहा होता है।

प्र. 472 हूहूअंग किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी हाहा का एक हूहूअंग होता है।

प्र. 473 हूहू किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी लाख हूहूअंगों का एक हूहू होता है।

प्र. 474 लतांग किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी हूहू का एक लतांग होता है।

प्र. 475 लता किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी लाख लतांगों को एक लता कहते हैं।

प्र. 476 महालतांग किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी लताओं को एक महालतांग कहते हैं।

प्र. 477 महालता किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी लाख महालतांगों को एक महालता कहते हैं।

प्र. 478 शीर्षप्रकंपित किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी महालता को एक शीर्षप्रकंपित कहते हैं।

प्र. 479 हस्तप्रेलित किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी लाख शीर्षप्रकंपित को एक हस्तप्रेलित कहते हैं।

प्र. 480 अचलात्म किसे कहते हैं?

उत्तर चौरासी हस्तप्रेलित को एक अचलात्म कहते हैं।

प्र. 481 पल्य के कितने भेद हैं?

उत्तर पल्य के तीन भेद हैं- व्यवहारपल्य, उद्धारपल्य और अद्धापल्य।

प्र. 482 प्रथम पल्य के साथ व्यवहार यह संज्ञा क्यों पड़ी?

उत्तर उद्धारपल्य और अद्धापल्य व्यवहार मूल होने से प्रथम पल्य का नाम व्यवहार पल्य पड़ा।

प्र. 483 द्वितीय पल्य के साथ उद्धार यह संज्ञा क्यों पड़ी?

उत्तर द्वितीय पल्य की संज्ञा उद्धार पल्य होने का कारण उससे उद्घृत निकाले गये रोमों के आधार से द्वीप और समुद्रों की गणना की जाती है।

प्र. 484 तृतीय पल्य की संज्ञा अद्धा पल्य क्यों पड़ी?

उत्तर अद्धा काल को कहते हैं अत: इससे मनुष्य, तिर्यञ्च, नारकी और देवादिक की आयु मापी जाती है।

प्र. 485 व्यवहार पल्य किसे कहते हैं?

उत्तर प्रमाणांगुल से मापे गये योजन बराबर लम्बे-चौड़े और गहरे अर्थात् दो हजार कोस गहरे और दो हजार कोस चौड़े गोल गड्ढे में एक दिन से लेकर सात दिन तक के जन्मे हुए मेढे के बालों को कैंची से ऐसा काटकर कि जिसे फिर काटा न जा सके, खूब ठोककर भर दो। यह व्यवहार पल्य है। सौ-सौ वर्ष में एक रोम निकालने पर जितने समय में वह गड्ढा खाली हो उतने काल को व्यवहार-पल्योपमकाल कहते हैं।

प्र. 486 उद्धार पल्य किसे कहते हैं?

उत्तर व्यवहार पल्य के प्रत्येक रोम के बुद्धि द्वारा इतने टुकड़े करो कि जितने असंख्यात कोटि वर्ष के जितने समय होते हैं और उन्हें दो हजार कोस गहरे और दो हजार कोस चौड़े गोल गड्ढे में भर दो। उसे उद्धार पल्य कहते हैं। उसमें से प्रति समय एक-एक रोम निकालने पर जितने समय में वह खाली हो उतने काल को उद्धार पल्योपम कहते हैं।

प्र. 487 अद्धापल्य किसे कहते हैं?

उत्तर उद्धार पल्य के प्रत्येक रोम के पुन: इतने टुकड़े करो कि जितने सौ वर्ष में जितने समय होते हैं और उन्हें पूर्वोक्त प्रमाण गड्ढे में भर दो। उसे अद्धापल्य कहते हैं। उसमें से प्रति समय एक-एक रोम निकालने पर जितने समय में वह गड्ढा खाली हो उतने काल को अद्धापल्योपम कहते हैं।

प्र. 488 सागर किसे कहते हैं?

उत्तर दस कोड़ा-कोड़ी व्यवहार पल्यों का एक व्यवहार सागरोपम, दस कोड़ाकोड़ी उद्धार पल्यों का एक उद्धार सागरोपम और दस कोड़ाकोड़ी अद्धापल्यों का एक अद्धा सागरोपम होता है।

प्र. 489 सूच्यंगुल किसे कहते हैं?

उत्तर अद्धापल्य के जितने अर्द्धच्छेद हों उतनी जगह अद्धापल्य को रखकर परस्पर में गुणा करने पर जो राशि उत्पन्न हो उतने आकाश प्रदेशों की मुक्तावली (मोतियों की पंक्ति सदृश) करने पर एक सूच्यंगुल होता है। अर्थात् एक अंगुल लम्बे प्रदेशों का प्रमाण एक सूच्यंगुल कहलाता है।

प्र. 490 अर्द्धछेद किसे कहते हैं?

उत्तर किसी राशि के आधा-आधा होने के वारों को अर्द्धच्छेद कहते हैं। अर्थात् जो राशि जितनी बार समरूप से आधी-आधी हो सकती है उसके उतने ही अर्द्धच्छेद होते हैं। जैसे- सोलह के अर्द्धच्छेद चार होते हैं क्योंकि सोलह राशि चार बार आधी-आधी हो सकती है-८, ४, २, १ ।

प्र. 491 प्रतरांगुल किसे कहते हैं?

उत्तर सूच्यंगुल के वर्ग को प्रतरांगुल कहते हैं।

प्र. 492 घनांगुल किसे कहते हैं?

उत्तर सूच्यंगुल के घन को घनांगुल कहते हैं। वह घनांगुल एक अंगुल लम्बे, एक अंगुल चौड़े और एक अंगुल ऊँचे स्थल स्थित प्रदेशों का परिमाण जानना।

प्र. 493 अंगुल के कितने भेद है?

उत्तर अंगुल के तीन भेद हैं- उत्सेधांगुल, प्रमाणांगुल और आत्मांगुल।

प्र. 494 उत्सेधांगुल किसे कहते हैं?

उत्तर आठ यव मध्यों (जौ के बीच के भागों) का एक उत्सेधांगुल होता है।

प्र. 495 यवमध्य किसे कहते हैं?

उत्तर आठ जूं का एक यवमध्य होता है।

प्र. 496 एक जूँ का प्रमाण क्या है?

उत्तर आठ लीख प्रमाण एक जूँ है।

प्र. 497 एक लीख कितने प्रमाण होती है?

उत्तर कर्म-भूमिज-मनुष्य सम्बंधी केश के अग्रभाग से आठ गुने प्रमाण एक लीख होती है।

प्र. 498 कर्म-भूमिज-मनुष्य से सम्बंधित केश के अग्र-भाग का प्रमाण कितना है?

उत्तर जघन्य-भोग-भूमिज-मनुष्य सम्बन्धी केश के अग्र-भाग से आठ गुने प्रमाण कर्म-भूमिज-मनुष्य से सम्बन्धित केश का अग्रभाग होता है।

प्र. 499 जघन्य-भोग-भूमिज-मनुष्य सम्बन्धी केश के अग्रभाग का प्रमाण कितना होता है?

उत्तर मध्यम-भोग-भूमिज-मनुष्य सम्बन्धी केश के अग्रभाग से आठ गुने प्रमाण जघन्य-भोग-भूमिज-मनुष्य सम्बन्धी केश के अग्र भाग का प्रमाण होता है।

प्र. 500 मध्यम-भोग-भूमिज-मनुष्य सम्बन्धी केश के अग्र-भाग का प्रमाण कितना होता है?

उत्तर उत्तम-भोग-भूमिज-मनुष्य सम्बन्धी केश के अग्र-भाग से आठ गुने प्रमाण मध्यम-भोग-भूमिज-मनुष्य सम्बन्धी केश के अग्र-भाग का प्रमाण होता है।

प्र. 501 उत्तम-भोग-भूमिज-मनुष्य सम्बन्धी केश के अग्र-भाग का प्रमाण कितना होता है?

उत्तर आठ रथरेणु मिलकर एक उत्तर भोग-भूमिज-मनुष्य सम्बन्धी केश के अग्रभाग का प्रमाण होता है।

प्र. 502 रथरेणु का प्रमाण कितना है?

उत्तर आठ त्रस-रेणु का एक रथरेणु होता है।

प्र. 503 त्रस-रेणु का प्रमाण कितना है?

उत्तर आठ त्रुटिरेणु का एक त्रस-रेणु होता है।

प्र. 504 त्रुटि-रेणु किसे कहते हैं?

उत्तर आठ संज्ञासंज्ञा का एक त्रुटि-रेणु होता है।

प्र. 505 संज्ञासंज्ञा किसे कहते हैं?

उत्तर आठ उत्संज्ञासंज्ञा मिलकर एक संज्ञासंज्ञा नामक स्कन्ध होता है।

प्र. 506 उत्संज्ञासंज्ञा किसे कहते हैं?

उत्तर अनन्तानंत परमाणुओं के संघात (मिलने) से एक उत्संज्ञासंज्ञा नामक स्कन्ध उत्पन्न होता है।

प्र. 507 उत्सेधांगुल से क्या-क्या मापा जाता है?

उत्तर उत्सेधांगुल से देव, नारकी, मनुष्य और तिर्यञ्चों के शरीर की ऊँचाई, देवों के निवास स्थान तथा नगरादि और अकृत्रिम जिनालयों की प्रतिमाओं की ऊँचाई मापी जाती है।

प्र. 508 प्रमाणांगुल किसे कहते हैं?

उत्तर उत्सेधांगुल से पाँच सौ गुना प्रमाणांगुल होता है। यही अवसर्पिणी काल के प्रथम चक्रवर्ती भरत का आत्मांगुल होता है। उस समय उसी आत्मांगुल से ग्राम, नगर आदि का माप किया जाता था।

प्र. 509 प्रमाणांगुल से क्या-क्या मापा जाता है?

उत्तर प्रमाणांगुल से द्वीप, समुद्र, कुलाचल, वेदी, नदी, कुण्ड, सरोवर और भरत आदि क्षेत्रों का माप प्रमाणांगुल से ही होता है।

प्र. 510 आत्मांगुल किसे कहते हैं?

उत्तर भरत और ऐरावत क्षेत्र में जिस-जिस काल में जो मनुष्य हुआ करते हैं उस-उस काल में उन्हीं मनुष्यों के अंगुल का नाम आत्मांगुल है।

प्र. 511 आत्मांगुल से क्या-क्या माप किया जाता है?

उत्तर झारी, कलश, दर्पण, भेरी, शय्या, गाड़ी, हल, मूसल, अस्त्र, सिंहासन, चवँर, छत्र, मनुष्य के निवास स्थान, नगर, उद्यान आदिक का माप अपने-अपने समय के आत्मांगुल से होता है।

प्र. 512 योजन किसे कहते हैं?

उत्तर चार कोस का एक योजन होता है। अथवा दो हजार धनुष का एक योजन होता है।

प्र. 513 योजन से क्या-क्या मापा जाता है?

उत्तर इस योजन के द्वारा जीवों के शरीर, नगर, मंदिर आदि को मापा जाता है।

प्र. 514 महायोजन किसे कहते हैं?

उत्तर दो हजार कोस का एक महायोजन होता है।

प्र. 515 महायोजन से क्या-क्या मापा जाता है?

उत्तर महायोजन से पर्वत, द्वीप, समुद्र आदि को मापा जाता है।

प्र. 516 एक धनुष का प्रमाण कितना होता है?

उत्तर चार हाथ का एक धनुष होता है।

प्र. 517 एक हाथ का प्रमाण कितना होता है?

उत्तर दो वितस्ति का एक हाथ होता है।

प्र. 518 एक वितस्थि (बालिश्त) का प्रमाण कितना होता है?

उत्तर दो पाद की एक वितस्ति होती है।

प्र. 519 एक पाद का प्रमाण कितना होता है?

उत्तर छै अंगुल का एक पाद होता है।

प्र. 520 जगच्छ्रेणी (जगत्-श्रेणी) किसे कहते हैं?

उत्तर पल्य के अर्द्धच्छेदों के असंख्यातवें भाग प्रमाण घनांगुल को रखकर उन्हें परस्पर में गुणा करने पर जो राशि उत्पन्न हो उसे जगच्छ्रेणी कहते हैं। वह राशि सात राजु लम्बी आकाश के प्रदेशों की पंक्ति प्रमाण जानना चाहिए।

प्र. 521 जगत्प्रतर या प्रतरलोक किसे कहते हैं?

उत्तर जगच्छ्रेणी के वर्ग को अर्थात् जगत्श्रेणी को जगत् श्रेणी से गुणा करने पर जो प्रमाण हो उसे जगत्-प्रतर या प्रतरलोक कहते हैं। वह जगत्प्रतर; जगच्छ्रेणी प्रमाण लम्बे और चौड़े क्षेत्र में जितने प्रदेश आयें उतना जानना चाहिए।

प्र. 522 घनलोक किसे कहते हैं?

उत्तर जगत्-श्रेणी के घन को लोक अथवा घनलोक कहते हैं। वह घनलोक जगत् श्रेणी प्रमाण लम्बे, चौड़े और ऊँचे क्षेत्र में जितने प्रदेश आयें उतना जानना चाहिए।

प्र. 523 राजू किसे कहते हैं?

उत्तर जगत् श्रेणी के सातवे भाग को राजू कहते हैं।

प्र. 524 राजू की उपमा क्या है?

उत्तर मान लीजिये कि एक हजार किलो वजन वाला लोहे का गोला स्वर्ग लोक से छोड़ा जावे (गिराया जावे) और वह गोला छह माह तक जहाँ तक की दूरी तय करे उतने क्षेत्र प्रमाण को एक राजू जानना चाहिए। ऐसे चौदह राजू प्रमाण लोक होता है।

साधना अभिशाप को वरदान बना देती है।
भावना पाषाण को, भगवान बना देती है॥
विवेक के स्तर से, नीचे उतरने पर-
वासना इंसान को शैतान बना देती है॥

-आचार्यश्री आजर्वसागरजी

सम्यग्ज्ञान-भूषण व सिद्धान्त-भूषण पदवी हेतु त्रैमासिक धार्मिक प्रश्न-पत्र

समय : 15 दिन अंक : 100

❖ 20 प्रश्नों में से प्रत्येक प्रश्न पर 5-5 अंक समान हैं। ❖ सभी प्रश्नों के उत्तर लाइन वाले पेपर्स पर पेरा बनाकर लिखें। ❖ उत्तर राष्ट्र-भाषा हिन्दी में ही लिखें। ❖ उत्तर लिखकर काटे जाने या घिसे जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।

प्र.1. योजन किसे कहते हैं?
प्र. 2. अंगुल के प्रकार बताइये?
प्र. 3. सागरोपम और सागर किसे कहते हैं?
प्र. 4. राजू की उपमा क्या है?
प्र. 5. पल्य के कितने भेद हैं?
प्र. 6. युग किसे कहते हैं?
प्र. 7. पूर्व किसे कहते हैं?
प्र. 8. अन्तर्मुहूर्त्त किसे कहते हैं?
प्र. 9. अर्धपुद्गल परिवर्तन काल को अनन्त क्यों कहा है?
प्र.10. संख्यात, असंख्यात और अनन्त के उदाहरण क्या हैं?
प्र.11. समय किसे कहते हैं?
प्र.12. घन क्षेत्र फल किसे कहते हैं?
प्र.13. व्यास या परिधि किसे कहा जाता है?
प्र.14. घनमूल किसे कहते हैं?
प्र.15. वर्गमूल क्या कहलाता है?
प्र.16. परिकर्माष्टक किन्हें बोलते हैं?
प्र.17. गुणकार किसे कहते हैं?
प्र.18. भागहार किसे कहा जाता है?
प्र.19. करणानुयोग का लक्षण क्या है?
प्र.20. लोक और अलोक किसे कहा जाता है?

आधार :आचार्यश्री आर्जवसागर विरचित-**'आगम-अनुयोग'**, (प्रश्नोत्तर प्रदीप)

प्रश्न पत्र के पूर्व में दिये गये प्रश्नोत्तरों को पढ़कर उनका चिंतवन-मंथन कर उत्तर-पुस्तिका की पूर्ति करें।

परीक्षार्थी परिचय

नाम.. उम्र ....

पिता/माता/पति का नाम ....

पता ....

....

मोबाईल/फोन नं. ....

सम्यग्ज्ञान-भूषण एवं सिद्धांत-भूषण पदवी हेतु परीक्षार्थी के लिए नियमावली

1. उपर्युक्त पदवी हेतु परीक्षार्थी की उम्र कम-से-कम 13 वर्ष पूर्ण और अधिक-से-अधिक आंखों की दृष्टि और लेखनी के स्थिर रहने तक रहेगी।
2. परीक्षार्थी अवश्य रूप से सप्त-व्यसनों अथवा मद्य, मधु, मांस का त्यागी एवं तीर्थंकर व उनकी जिनवाणी का श्रद्धालु होना चाहिए।
3. जो महानुभाव भाव-विज्ञान पत्रिका के सदस्य हैं उन्हें परीक्षा सामग्री प्रश्नोत्तर रूप में भाव-विज्ञान पत्रिका के साथ संलग्न रूप से सतत रूप से चार वर्षों तक प्राप्त होती रहेगी।
4. चारों अनुयोगों के शास्त्रों सम्बन्धी क्रमश: प्राप्त होने वाले प्रश्नोत्तरों तथा अंत में दिये गये प्रश्न-पत्र को स्वयं पढ़कर हल करें और प्रेषित करें तथा अन्य जनों तक भी परीक्षा में भाग लेने की जानकारी अवश्य देने का पूर्ण प्रयास करें। (इस कार्य हेतु इंटरनेट का भी उपयोग कर सकते हैं।)
5. जो महानुभाव पत्रिका के सदस्य नहीं हैं उन्हें प्रश्नोत्तर रूप सामग्री प्राप्त करने हेतु डाक व्यय का भुगतान स्वत: करना होगा।
6. परीक्षार्थी के लिए यह आवश्यक होगा कि वे प्रश्नोत्तरी व प्रश्नपत्र पाते ही एक माह के अन्तर्गत साफ-सुथरे रजिस्टर के पेपर्स पर पूर्ण शुद्धता और विनयपूर्वक उत्तर लिखकर निम्नलिखित पते पर भेजने का उपक्रम करें।
7. उत्तर पुस्तिका पर अंक (नम्बर) देने का भाव उत्तर-पुस्तिका में वर्णित उत्तरों की शुद्धता और लिखावट आदि पर निर्भर करेगा।
8. परीक्षार्थी से ऑनलाइन या फोन द्वारा उत्तर पूछने की पहल भी की जा सकती है अत: अपने पते के साथ ई-मेल एड्रेस या मोबाईल/फोन नं. अवश्य लिखें।
9. उत्तर लिखकर काट दिये जाने पर या घिस दिये जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।
10. परीक्षार्थी प्रश्नों के उत्तर स्वत: अपनी लिखावट में ही लिखें, अन्य किसी के नाम से उत्तर पुस्तिका भरकर प्रेषित किये जाने पर हमारे परीक्षा बोर्ड द्वारा उसे पदवी हेतु मान्य नहीं किया जावेगा।
11. कदाचित् किसी भव्य द्वारा किसी विशेष परिस्थिति में परीक्षा न दे सकने के कारण और उनके आग्रह किये जाने पर उन्हें प्रश्नोत्तरी व प्रश्नपत्र उपलब्ध कराये जाने की व्यवस्था परीक्षा-बोर्ड द्वारा की जा सकेगी।
12. सम्यग्ज्ञानभूषण एवं सिद्धांतभूषण पदवी सम्बन्धी उत्तीर्णता प्राप्त करने वाले भव्य गणों को भगवान महावीर आचरण संस्था समिति के द्वारा दो या चार वर्षों में प्रमाण पत्र सह सम्मानित किया जावेगा।
13. प्रश्नोत्तरी व प्रश्न-पत्र मंगवाने हेतु परीक्षा-बोर्ड के निम्न लिखित पदवीधारी से सम्पर्क करें:-

भाव-विज्ञान पत्रिका के	भ. महावीर आचरण संस्था	भ.महावीर आचरण संस्था
प्रधान सम्पादक	समिति के मंत्री	समिति के अध्यक्ष
डॉ. अजित जैन	श्री राजेन्द्र जैन	श्री महेन्द्र जैन
मो. 7222963457	मो. 7049004653	मो. 7999246837

14. उत्तर पुस्तिका डाक/पोस्ट से निम्न पते पर प्रेषित करें:-
सम्पादक, भाव-विज्ञान, एम आई-जी 8/4, गीतांजली कॉम्पलेक्स,
कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल 462003 (म.प्र.)

संघस्थ मुनि परिचय

मुनिश्री 108 विलोकसागर

पूर्व नाम : **ब्र. चक्रेश भैया**
जन्म स्थान : मुड़ेरी, जि. दमोह (म.प्र.)
जन्म तिथि : 18 अप्रैल 1981
माता का नाम : श्रीमति सुशीला जैन
पिता का नाम : श्रीमान कोमलचंद जी जैन
लौकिक शिक्षा : शास्त्री मढ़ियाजी जबलपुर
ब्र.व्रत : 1998 मुनिश्री मार्दवसागरजी से
प्रतिमा व्रत : दूसरी प्रतिमा 2005 में
आठवीं प्रतिमा : आ.श्री आर्जवसागरजी से
भाईबहन : 3 भाई, 1 बहन श्री राजकुमार जैन, लालचंद जैन और स्वयं बहन श्रीमति बबीता जैन रिषभ जैन

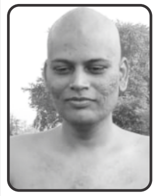

मुनिश्री 108 विशोधसागर

पूर्व नाम : **ब्र. किरण जैन (कराड़े)**
जन्म स्थान : चिखली (महा.), तह. कागल, जि.-कोल्हापुर
जन्म तिथि : 28 अक्टूबर 1986
माता का नाम : श्रीमति पुष्पावती जी
पिता का नाम : श्रीमान मोहनलाल जी जैन
लौकिक शिक्षा : B.Com, MBA कोल्हापुर से
ब्र.व्रत : 2009 में पथरिया आ.श्री विद्यासागरजी से
प्रतिमा व्रत : दूसरी प्रतिमा 2012 में आ.श्री विद्यासागरजी से। सप्तम प्रतिमा 2015 में आ.श्री आर्जवसागरजी से
आठवीं प्रतिमा : आ.श्री आर्जवसागरजी से 2019 में
बहने : श्रीमति सुरेखा जैन हुपरी, श्रीमती आशा जैन बारसी महा.

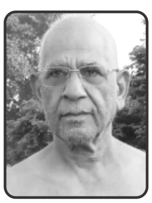

मुनिश्री 108 विबोधसागर

पूर्व नाम : **डॉ. राजकुमार जी जैन**
जन्म स्थान : मसुरहाई, राहतगढ़, सागर (म.प्र.)
जन्म तिथि : 28 नवम्बर 1951
माता का नाम : स्व.श्रीमति राजरानी जैन
पिता का नाम : स्व.श्री कुंदनलाल जी जैन
पत्नी का नाम : श्रीमति मनोरमा जैन
लौकिक शिक्षा : B.A. M.S.
ब्र. व्रत : 8 अक्टूबर 2018
प्रतिमा व्रत : सप्तम प्रतिमा 8 अक्टूबर 2018 आ.श्री विद्यासागरजी से।
आठवीं प्रतिमा : 2019 आ.श्री आर्जवसागरजी से
पुत्र : डॉ. राजदीप जैन सतना
पुत्री : प्रीताञ्जलि जैन, गीताञ्जलि जैन
भाई : श्री महावीर प्रसाद जी जैन, रामपुर (उ.प्र.) श्री जीवनलाल जैन सीहोरा

मुनिश्री 108 विदितसागर

पूर्व नाम	: **ब्र. चन्द्रराज जैन**
जन्म स्थान	: गंजीगेरी (कर्नाटक) तहसील सागरा जि. शिमोगा
जन्म तिथि	: 09 सितम्बर 1979
माता का नाम	: श्रीमति जिनरत्ना जैन
पिता का नाम	: श्रीमान पद्मराज जैन
लौकिक शिक्षा	: मिडिल स्कूल तक (कृषिउद्योग)
ब्र.व्रत	: 2007 में शिवनगर आ.श्री विद्यासागरजी से
प्रतिमा व्रत	: तीसरी 2009 आ.श्री विद्यासागरजी से। पाँचवी/आठवीं 2019 आ.श्री आर्जवसागरजी से।
बहन	: प्रेमा कांतराज जैन

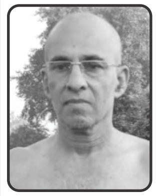

ऐलकश्री 105 वर्धनसागर

पूर्व नाम	: **ब्र. सतीश जी**
जन्म	: चांदुर रेल्वे, अमरावती, महा.
जन्म तिथि	: 14 सितम्बर 1959
पिता का नाम	: स्व. मधुसूदनजी
माता का नाम	: श्रीमति सरोज जैन (भाग्यवती)
लौकिक शिक्षा	: 10 वीं मैट्रिक
ब्र. व्रत	: मुनिश्री सुवीरसागरजी आजीवन
प्रतिमा	: दूसरी मुनिश्री सुवीरसागरजी से। सप्तम/आठवीं आ.श्री आर्जवसागरजी से 2019
धर्मपत्नी	: श्रीमति सरिता जैन (सरोज)
भाई	: सुभाषचंद, प्रदीप, संजय, कैलाश, जितेन्द्र
बहन	: सौ. संगीता जैन
पुत्र	: दीपक जैन

महिमा स्वरूप है सम्यग्ज्ञान

-आचार्यश्री आजर्वसागरजी

आचार्य आर्जवसागरजी ने अपने प्रवचन में कहा कि तीर्थंकरों की वाणी से प्राप्त जो चार अनुयोग रूप सम्यग्ज्ञान है, वह सभी मोक्ष पथिकों के लिए परम औषधि के समान है। सम्यग्ज्ञान के माध्यम से जीवों के हेय- उपादेय के ज्ञान के साथ-साथ सम्यक् चारित्र में वृद्धि एवं उसमें विशेष निखार आता है। मन की चंचलता को दूर करने एवं मोक्षमार्ग में विशेष रुचि या विशुद्धि बढ़ाने हेतु सम्यग्ज्ञान रूप शास्त्रों का अध्ययन परम अवलम्बन स्वरूप है। जो ज्ञान वस्तु के स्वरूप को न्यूनतारहित, अधिकता रहित, विपरीतता रहित और संदेह रहित जैसा का तैसा जानता है उस ज्ञान को गणधर या श्रुतकेवली सम्यग्ज्ञान कहते हैं।

साभार : आर्जव-वाणी

गतांक से आगे.....

प्रागैतिहासिक-प्राग्वैदिक जैन धर्म और उसके सिद्धान्त

-श्रीनाथूलालजी जैन शास्त्री

बौद्धधर्म और जैन धर्म

भंडारकर के शब्दों में कुछ समय जैन साधु भी रहे। 'महात्मा बुद्ध वाज़् ए जैन संत फॉर सम टाइम' प्रो. भंडारकर, जे.बी.एम. अलाहाबाद फरवरी 1925 पृ.25

मज्झिम निकाय (बौद्धग्रंथ) 1/2/2 हिन्दी पृ. 48-49 के अनुसार बुद्ध ने स्वीकार किया है ''वहाँ सारि पुत्र! मेरी यह तपस्विता थी। अचेलक नग्न था। मुक्ताचार, हस्तावलेखन नष्ट हिमांदतिक न, तिष्ठ भंदतिक (ठहरिये और भिक्षा करो, अपने उद्देश्य व नियंत्रण से नहीं खाता था। केशडाढ़ी लोचने वाला था। पीछे कठोर तपस्या से घबराकर मध्यम मार्ग ग्रहण कर बौद्धधर्म स्थापित किया।)

मज्झिम निकाय पी.पी.एस.आइ.पी.पी. 92-93 में लिखा है- मैंने निर्ग्रंथों से पूछा, ऐसी घोर तपस्या की वेदना को क्यों सहन कर रहे हो?

उन्होंने कहा, निर्ग्रंथ ज्ञात पुत्र महावीर सर्वज्ञ और सर्वदर्शी है। उन्होंने बताया है कि कठोर तप करने से कर्म कटकर दु:ख क्षय होता है। बुद्ध कहते हैं, यह कथन हमारे लिए रुचि कर प्रतीत होता है और हमारे मन को ठीक जंचता है।

डॉ. जैकोवी को जैनधर्म, बौद्धधर्म की माता और लोकमान्य तिलक को भ.बुद्ध, भ. महावीर के शिष्य स्वीकार करना पड़ा(डॉ. जैन (सूरत) वालम एक्स पी. 48) (जैनधर्म महात्व भाग 1 (सूरत) पृ.83- शांति के अग्रदूत वर्द्धमान महावीर से पृ. 438)

नारायण श्रीकृष्ण और तीर्थंकर नेमिनाथ

नारायण श्रीकृष्ण के पिता वसुदेव और तीर्थंकर नेमिनाथ के पिता समुद्र विजय दोनों सहोदर भाई थे।

ऋग्वेद (1/14/89/9) में 'स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमि:' आया है। यह तीर्थंकर नेमिनाथ के लिए है।

छान्दोग्योपनिषद् में अरिष्ट नेमि का नाम घोर अंगिरस आया है। धर्मानंद कौशंबी भी भगवान नेमिनाथ का नाम अंगिरस मानते हैं (भारतीय संस्कृति और अहिंसा) घोर शब्द जैन श्रमणों की तपस्या की उग्रता बताने के लिए अनेक स्थानों पर आया है।

छांदोग्योपनिषद् में श्रीकृष्ण को अंगिरस ऋषि द्वारा 'त्वंअक्षतमसि-अच्युतमसि-प्राण संशितमसि। इस प्रकार उपदेश दिया गया है।

ऋग्वेद-यजुर्वेद-सामवेद में भगवान नेमिनाथ को ताक्ष्र्य अरिष्ट नेमि लिखा है-

स्वस्ति न: इन्दे वृद्धश्रव्स: स्वस्ति न: पूषा विश्ववेदा: स्वस्ति न: स्तोर्पाक्ष्र्योऽ रष्टिनेमि: स्वस्ति नो वृहस्पतिर्दधातु।

इस मंत्र में सर्पादि के विषहरण करने वाले गरुड़ समान विघ्नहर नेमिनाथ की स्तुति की गई है।

डॉ. राधाकृष्णन ने (इंडियन फिलोसफी वाल्यूम 1 पृ.247) लिखा है कि यजुर्वेद में ऋषभनाथ, अजितनाथ और अरिष्ट नेमि इन तीर्थंकरों का उल्लेख पाया जाता है।

स्कंद पुराण के प्रभास खंड में वर्ण है कि अपने जन्म के पिछले भाग में वामन ने तप किया। उस तप के प्रभाव से शिव ने वामन को दर्शन दिये। वे शिव श्यामवर्ण नग्न पद्मासन स्थित थे। वामन ने उनका नाम नेमिनाथ रखा। नेमिनाथ इस घोर कलिकाल में सब पापों का नाश करने वाले हैं। उनके दर्शन और स्पर्श से करोड़ों यज्ञों का फल प्राप्त होता है। (संस्कृत हिन्दी अनुवाद) कर्नल टॉड ने अरिष्ट नेमि के संबंध में लिखा है कि प्राचीन काल में चार बुद्ध या मेधावी महापुरुष हुए हैं। उनमें प्रथम आदिनाथ, दूसरे नेमिनाथ। नेमिनाथ ही स्केंडोनोबिया निवासियों के प्रथम ओडिन तथा चीनियों के प्रथम 'फो' देवता थे।

प्रो. वारनेट, डॉ. नागेन्द्रनाथ वसु, डॉ. फुहर्र, मिस्टर करण, डॉ. हरिदत्त, डॉ. प्राणनाथ विद्यालंकार इत्यादि का स्पष्ट मत है कि भगवान अरिष्ट नेमि को प्रभावशाली पुरुष एवं ऐतिहासिक पुरुष मानने में कोई बाधा नहीं।

महाभारत में वासुदेव का उल्लेख है। भंडारकर, लोकमान्य तिलक, डॉ. राम चौधरी आदि विद्वानों ने पाणिनि व्याकरण के सूत्रों के आधार पर ईसा की सात शताब्दी पूर्व वासुदेव की उपासना प्रचलित होना बताया है। रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार 'सूरदास' में वासुदेव भक्ति का निरूपण महाभारत काल में हुआ। विष्णु और वासुदेव का ऐकत्व भी महाभारत काल में स्वीकार किया है। (सूरदास 26) डॉ. भंडारकर ने दोनों वासुदेव व कृष्ण को पहले दो पृथक्-पृथक् माना है, पीछे एक हो गये है।

महाभारत काल दोनों को एक ही मानता है। वासुदेव मुख्य नाम था, कृष्ण गोत्रसूचक था। 'दीर्घनिकाय' भी दोनों नाम को एक ही मानता है। डॉ. रामकुमार वर्मा, कात्यापन, पतंजालि दोनों को एक ही मानते हैं। (हिन्दी सा. की आलो. इति. पृ. 472) भगवान नेमिनाथ ने निवृत्ति प्रधान लोकोत्तर महापुरुष एवं नारायण श्री कृष्ण ने प्रवृत्ति प्रधान होकर हिंसा मांस-मदिरा के विरोध में गौरस द्वारा अहिंसा का प्रचार प्रसार किया। उन्होंने मांसाहारी क्षत्रियों को आत्मालोचन के लिए विवश कर दिया। दोनों असाधारण महामानव थे। महाभारत में 'नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्' कहकर कृष्ण की महत्ता का अपूर्व वर्णन किया है। वे लोक रक्षक आदर्श नरोत्तम थे। श्रीमद्भगवत में कृष्ण को परम ब्रह्म बताया है।

ऋषभ और शिव

मोहनजोदड़ो से प्राप्त नग्न दो योगी की मूर्ति को श्री रामप्रसाद चन्द्रा ने संभावना रूप में ऋषभदेव की मूर्ति बतलाया और हरप्पा से प्राप्त नग्न धड़ को रामचन्द्रन् ने ऋषभ की मूर्ति बतलाया था। दोनों स्थानों से शिव की मूर्ति मिली हैं। उस पर डॉ. राधा कुमुद मुकर्जी ने अपना अभिप्राय प्रकट किया है कि 'यदि उक्त मूर्तियाँ ऋषभ का ही पूर्व रूप हैं तो शैव धर्म की तरह जैनधर्म का मूल ताम्रयुगीन सिंधु सभ्यता तक चला जाता है। इससे सिंधु सभ्यता एवं ऐतिहासिक भारतीय सभ्यता के मध्य की खोई हुई कड़ी का भी एक उभय साधारण सांस्कृतिक परम्परा के रूप में कुछ उद्धार हो जाता है।'

दलिय मयणप्पयावा त्तिकाल विसएहि तीहिणण्णेति।
दिट्ठ सयलत्थ सारु सुदाड्ढंति उय, मुणिव्वइणो॥ 24॥
तियरयण तिसूल धारिय मोहांधासुर कवंधविंदहरा।
सिद्ध सयलप्परूवा अरहंता दुष्णयकयंता॥ 25॥

अर्थ- कामदेव के प्रताप को दलित करने वाले, त्रिकाल के विषय रूप त्रिनेत्र से सर्वपदार्थ ज्ञाता, त्रिपुररूप मोह, राग द्वेष को भस्म कर देने वाले, मुनिपति याने दिगम्बर मुनिपति- ईश्वर, सम्यग्दर्शन, ज्ञान, चारित्र इन रत्नत्रय रूप त्रिशूलधारी, मोहरूप अंधकार के कबंध (धड़) वृन्द के हरणकर्ता, संपूर्ण आत्म स्वरूप के प्राप्त करने वाले, दुर्नय के अंतकर्ता श्री अरहंत होते हैं। यहाँ सर्वप्रथम परमात्मदशा प्राप्त करने वाले ऋषभ देव की अरहंत अवस्था परमात्म दशा का रूपक है। अर्हंत पूज्य को कहते हैं।

यहाँ रूपकालंकार में शिव और ऋषभदेव की तुलना निम्न प्रकार है:-

शिव	**ऋषभ देव**
नग्नत्वं नीलकंठस्य	दिगम्बर मुनि अवस्था
जटाजूट में गंगा	हिमवन पर्वत के पद्मद्रह से निकलने (गंगावतरण) वाली गंगा का प्रवाह नीचे जटाजूट वाली मूर्ति पर गिरता है। ऋषभमूर्ति जटावाली प्राचीन उपलब्ध है।
पार्वती पति	योगी के शरीर के पृष्ठभाव की रीढ़ की अस्थि पार्वती कहलाती है ऋषभ भी योगी माने जाते हैं। या कैलाश पर्वत पर रहने वाली जनता पार्वती कहलाती है।
विषपान (नीलकंठ)	रागादिविकार को पीने वाले।
नादिया वाहन	वृषभ चिन्ह।
गणेश (पुत्र)	केवल ज्ञानी या गौतम गणधर के स्वामी।
गंगा	स्वानुभूति रसिक या द्वादशांग आगम की गंगा बहाने वाले।
त्रिशूल	रत्नत्रय (सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र के धारी)।
नरक (अंध) असुर	मोहरूपी असुर
शिवरात्रि	ऋषभ के मोक्ष (शिवपद) का दिन
कैलाश में शिवलिंग	कैलाश मुक्ति स्थान तिब्बत की भाषा में लिंग (क्षेत्र) पूजा कैलाश की आकृति लिंग रूप है। भरत चक्रवर्ती द्वारा वहाँ घंटे भी इसी आकार के निर्माण कराये थे।
प्रलयकर्ता	छठे काल के पश्चात् होने वाले प्रलय के ज्ञाता।

नाभिराय के पुत्र ऋषभ से भरत चक्रवर्ती पुत्र हुए, उनके नाम से भारत वर्ष नाम प्रसिद्ध हुआ। शातपथ नामक प्रसिद्ध ग्रंथ ने इस भरत को सूर्यवंशी बताकर इस मत को नष्ट कर दिया कि चन्द्रवंशी दुष्यंत के पुत्र के नामपर इस देश का नाम भारत वर्ष पड़ा। शिवपुराण, वायुपुराण, स्कंदपुराण, अग्नि पुराण, नारदीय पुराण,

कर्णपुराण, गरुडपुराण, ब्रह्मांड, बाराह एवं लिंग पुराण भी इसके समर्थक हैं कि ऋषभ पुत्र भरत से भारत नाम प्रसिद्ध हुआ।

उपनिषद् और अध्यात्म विद्या

प्रो.डॉ. हीरालाल जी ने ''भारतीय संस्कृति में जैनधर्म का योगदान'' (म.प्र. शासन साहित्य परिषद् भोपाल 1962 द्वारा प्रकाशित) पृ. 49 पर लिखा है कि- वैदिक साहित्य का एक अंग आरण्यक और उपनिषद कहलाने वाले ग्रंथ हैं, जिनमें हमें भारत के प्राचीनतम दर्शन शास्त्रियों का तत्त्व चिंतन प्राप्त होता है।

को अवुधा वेद क इह अवोचत्।
कुत आजाता कुत इयं विसृष्टिः॥

(ऋग्वेद 10, 129, 6)

अर्थात् कौन ठीक से जानता है और कौन ठीक से कह सकता है कि यह सृष्टि कहाँ से उत्पन्न हुई? ऐसे तत्त्व चिंतनात्मक विचारों के दर्शन वेदों में भी अविच्छिन्न धारा दृष्टिगोचर होती है और न उक्त प्रश्नों के समाधान का कोई व्यवस्थित प्रयत्न किया गया, दिखाई देता है। इस प्रकार का चिंतन आरण्यकों और उपनिषदों में हमें बाहुलता से प्राप्त होता है। इन रचनाओं का प्रारंभ ब्राह्मण काल में अर्थात् ई.पू. आठवीं शताब्दी के लगभग हो गया था। और सहस्रों वर्ष पश्चात् तक निरंतर प्रचलित रहा, जिसके ग्रंथ पाये जाते हैं। ये ग्रंथ केवल अपने विषय और भावना की दृष्टि से ही नहीं, किन्तु अपनी ऐतिहासिक व भौगोलिक परम्परा द्वारा शेष वेदिक साहित्य से अपनी विशेषता रखते हैं, जहाँ वेदों में देवी-देवताओं का आह्वान, उनकी पूजा अर्चना तथा सांसारिक सुख और अभ्युदय संबंधी वरदानों की मांग की प्रधानता है, वहाँ उपनिषदों में उन समस्त बातों की कठोर उपेक्षा और तात्त्विक एवं आध्यात्मिक चिंतन की प्रधानता पाई जाती है। इन चिंतन का आदि भौगोलिक केन्द्र वेदप्रसिद्ध पंचनद् प्रदेश व गंगा-यमुना के पवित्र मध्यदेश न होकर वह पूर्व प्रदेश है, जो वैदिक साहित्य में धार्मिक दृष्ट से पवित्र नहीं माना गया।

अध्यात्म के आदि एवं प्रधान चिंतक जनक जैसे क्षत्रिय राजर्षि जनक एवं उनके पूर्वज नमिराजा जैनधर्म के 21 वे तीर्थंकर हुए हैं।

मेरे (लेखक) पास 'कल्याण' का उपनिषद् अंक है। उसमें उपलब्ध 122 उपनिषद की सूची है। इस अंक (जनवरी 1949 गीता प्रेस गोरखपुर) में 54 उपनिषदों का वर्णन है।

महोपनिषद (साम वेदीय) द्वितीय अध्याय में देखिये- महातपस्वी दिगम्बर शुकदेव जी ने अपने पिता क्रृष्ण द्वैपायन व्यास जी से प्रश्न किया, यह जगत् प्रपंच कैसे उत्पन्न हुआ, किस प्रकार विलीन होता है? यह क्या है, किस प्रकार है? कब हुआ है? बतलाइये। व्यास जी बहुत कुछ कहने के बाद पुत्र को संतुष्ट न देखकर बोले- मैं तत्त्वतः इन बातो को नहीं जानता। मिथिलापुरी में जनक नामके राजा हैं, वे इन सब बातों को भली भांति जानते हैं। पुत्रः तुम उनसे सब कुछ प्राप्त कर सकते हो। शुकदेव जी जनक के पास विदेह नगरी पहुँचे॥ 14-20॥ बहुत सी चर्चा के पश्चात् राजा जनक ने कहा- शुकदवे जी, मैं सारे ज्ञान विस्तार को कहता हूँ। जिसके जानने में पुरुष शीघ्र ही मुक्ति को प्राप्त कर सकता है। दृश्य जगत् है ही नहीं- यह बोध हो जाने पर

मन की दृश्य विषय से परिशुद्धि हो जाती है। (अध्यात्म दृष्टि से) जब यह बोध परिपक्व हो जाता है, तब उससे निर्वाण रूपी परमशांति प्राप्त होती है। वासनाओं का तो नि:शेष परित्याग होता है, जो श्रेष्ठ त्याग है, उसी विशुद्ध अवस्था को साधु जनों ने मोक्ष कहा है। आत्म विद्या का ज्ञान उपनिषदों से ही होता था, वेदों से नहीं, इस संबंध में देखिए- अंगिरा के पास जाकर शौनक ने पूछा भगवन्! किसे जानने पर यह सबकुछ जान लिया जाता है? अंगिरा ने कहा- दो विद्यायें हैं- एक परा और दूसरी अपरा। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष यह अपरा है तथा जिससे उस अक्षर (नित्य) परमात्मा का ज्ञान होता है, वह परा है।

(मुंडकोपनिषद् 1/1/3-5)

श्रमण परम्परा में क्षत्रियों की प्रमुखता रही है। क्षत्रिय की उत्कृष्टता का उल्लेख 'वृहदारण्यकोपनिषद्' में भी है। वहाँ लिखा है आरंभ में एक ब्रह्म ही था। अकेले होने के कारण वह विभूतियुक्त कर्म करने में समर्थ नहीं हुआ उसने अतिशय से क्षत्रिय इस प्रशस्त रूप की रचना की अर्थात् देवताओं में जो क्षत्रिय, इन्द्र, वरुण, सोम, रुद्र, मेघ, यम, मृत्यु और ईशान आदि हैं, उन्हें उत्पन्न किया, अत: क्षत्रिय से उत्कृष्ट कोई नहीं है। क्षत्रियों की श्रेष्ठता उनकी रक्षात्मक शक्ति के कारण नहीं, किन्तु आत्मविद्या की उपलब्धि के कारण थी। यह आश्चर्यपूर्ण नहीं, किन्तु बहुत यथार्थ बात है कि **ब्राह्मणों को आत्मविद्या क्षत्रियों से प्राप्त हुई है।**

आरूणि के पुत्र श्वेतकेतु पंचाल देशीय लोगों की सभा में आये। वहाँ प्रवाहण ने श्वेतकेतु से पूछा, प्रजा कहाँ जाती है, वह इस लोक में कैसे आती है आदि प्रश्नों का उत्तर उसे प्राप्त नहीं हुआ तब श्वेतकेतु के पिता गौतम के पास आए और गौतम राजा के स्थान पर अपनी जिज्ञासा प्रस्तुत की। राजा ने कहा- गौतम पूर्वकाल में तुमसे पहले यह विद्या ब्राह्मणों के पास नहीं गई। इसी से सम्पूर्ण लोकों में क्षत्रियों का ही अनुशासन होता रहा है।

(छान्दोग्योपनिषद 5/3/1-7, पृ. 472-479)

अध्यात्म विद्या की परम्परा बहुत प्राचीन रही है, संभवत: वेद रचना के पहले भी रही है। उसी के पुरस्कर्त्ता क्षत्रिय थे। ब्राह्मण पुराण भी इस बात का समर्थन करते हैं कि **भगवान ऋषभ क्षत्रियों के पूर्वज थे।**

(ब्रह्मांड पुराण पूर्वार्द्ध अनुषंगपाद अध्याय 14/60)

आर्यों के आगमन के पहले भारत में सभ्य और असभ्य दो जातियाँ थीं। असुर, नाग और द्रविड़ ये सभ्य और दास ये असभ्य थे। असुर अर्हन् धर्म के उपासक थे। विष्णु पुराण (3/17/18) पद्मपुराण (सृष्टिखंड, अध्याय 13, श्लोक 170-413) मत्स्य पुराण (अध्याय 14, श्लोक 43-49) और देवी भागवत पुराण (स्कंध 4, अ.13, श्लोक 56-57) में असुरों को अर्हत् का अनुयायी बनने का उल्लेख है। वेदों और पुराणों में कथित 'देवदानव युद्ध' आर्यों और आर्य पूर्व जातियों के प्रतीक का युद्ध है। आर्यों के आगमन के साथ-साथ असुरों से उनका संघर्ष छिड़ा और वह तीन सौ वर्ष तक चलता रहा (अथदेवासुर युद्धमभूत्वर्ष शतुत्रयं, मत्स्य पुराण, अ.24, श्लोक 30) असुर प्रारंभ में आक्रमण में आर्यों से पराजित नहीं हुए। जब तक वे सदाचारी और संगठित रहे। जब असुरों के आचरण में शिथिलता आई तब आर्यों से वे परास्त हो गए।

(महाभारत, शांति पर्व, 227/59-60, एवं अ. 228/49/50)

आर्यों का प्रभुत्व उत्तर भारत पर अधिक हुआ। दक्षिण भारत में उनका प्रवेश देर से हुआ। विशेष प्रभावशाली रूप में नहीं हुआ। पद्मपुराण (13/412) में बताया है कि असुर लोग जैनधर्म को स्वीकार करने के बाद नर्मदा के तट पर निवास करने लगे। इससे स्पष्ट है कि अर्हत् का धर्म उत्तरभारत में आर्यों का प्रभुत्व बढ़ जाने के बाद दक्षिण भारत में विशेष बलशाली बन गया। असुरों का उत्तर से दक्षिण की ओर आना उनकी एवं द्रविड़ों की सभ्यता और संस्कृति की समानता का सूचक है।

श्रमण परम्परा में धर्म संघ के लिए तीर्थ शब्द का प्रयोग होता था और उसके प्रवर्तक तीर्थंकर कहलाते थे।

(भगवती 20/8)

भारतीय विद्याओं में आत्म विद्या सर्वोच्च है। आत्मविद्या को जान लेने पर सब कुछ जान लिया जाता है (मुंडकोपनिषद् 11+3) भगवान ऋषभ मोक्ष धर्म के प्रवर्तक अवतार हैं।

(श्रीमद् भागवत् 1/2/20)

भगवान ऋषभ के 100 पुत्र थे उनमें नव पुत्र वानरशन श्रमण बने वे आत्मविद्या विशारद थे।

(श्रीमद् भागवत 11/2/20)

ब्रह्म का साक्षात्कार पाने वाले विद्वान सन्यासी के लिए यज्ञ का यजमान आत्मा है। अंत:करण की श्रद्धा पत्नी है। शरीर समेधा है। हृदय वेदि है। मन्यु (क्रोध) पशु है। तप अग्नि है और दम दक्षिणा है।

(तैत्तिरीय आरण्यक, प्रपाठक अनुवाक 64, भाग 2 पृ. 779)

सर राधाकृष्णन अपने भारतीय दर्शन (इंडियन फिलासफी भाग 1 पृ. 287) में लिखते हैं- जैन परम्परा के अनुसार जैनधर्म के संस्थापक श्री ऋषभदेव थे जो शताब्दियों पहले ही हो गए हैं। इस बात का प्रमाण है कि ई.पू. प्रथम शताब्दी से प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव की पूजा होती थी। इसमें संदेह नहीं कि जैनधर्म वर्धमान या पार्श्वनाथ से भी पहले प्रचलित था। यजुर्वेद में ऋषभदेव, अजितनाथ और अरिष्ट नेमि इन तीन तीर्थंकरों के नामों का निर्देश है। भागवत् पुराण इस बात की पुष्टि करता है कि ऋषभ देव इस काल चक्र में जैनधर्म के संस्थापक थे।

जिस समय वैदिक आर्य भारत वर्ष में आए उस समय भी यहाँ ऋषभदेव का धर्म मौजूद था और उनके अनुयायियों से भी वैदिक आर्यो का संघर्ष अवश्य हुआ होगा। द्रविड़ वंश मूलत: भारतीय है और द्रविड़ संस्कृति भारतीय है, क्योंकि द्रविड़ भाषा केवल भारत वर्ष में ही पायी जाती है। यह द्रविड़ संस्कृति अवश्य ही जैनधर्म से प्रभावित रही है। यही कारण है जो जैनधर्म में द्रविड़ नामका एक संघ पाया जाता है। द्रविड़ संघ का एक मात्र घर दक्षिण भारत ही है। अत: उनके प्रभाव में वैदिक आर्य बहुत बाद में आए होंगे यही वजह है जो ऋग्वेद के बाद में संकलित किये गये, यजुर्वेद में कुछ जैन तीर्थकरों के ही नाम पाये जाते हैं।

जब वैदिक धर्म यज्ञ प्रधान बन गया और पुरोहितों का राज्य हो गया तो उसके बाद में आम जनता में जो उनके प्रति अरूचि पाते हैं, जिसका उल्लेख ऊपर किया है वह आकस्मिक नहीं है, किन्तु शुष्क क्रियाकांड

की विरोधिनी उस श्रमण संस्कृति के जन्मदाता ऋषभदेव थे। उसी के फलस्वरूप उपनिषदों की रचना की गई, जिनसे वेद का प्रमाण तो स्वीकार किया गया किन्तु उससे प्राप्त होने वाले ज्ञान को नीचा ज्ञान बतलाया गया। इस प्रकार उपनिषदों ने ऊँचे आध्यात्मिक सिद्धांत का प्रतिपादन तो किया किन्तु वैदिक क्रियाकांड का विरोध नहीं किया।

सर राधाकृष्णन के अनुसार- (इंडियन फिलासफी भाग 2, पृ. 264-65) जब जिस समय आध्यात्मिक सिद्धांत के प्रति एक निष्ठा की चाह थी। तब हम उपनिषदों में टालने की नीति का व्यवहार होता हुआ पाते हैं। वे प्रारंभ तो करते हैं आत्मा को समस्त बाह्य प्रवृत्तियों से स्वतंत्र करने से, किन्तु उसका अंत होता है उसी पुरानी लड़ी को जोड़ने से। जीवन का नया आदर्श स्थापित करने के बदले वे पुराने मार्ग को ही फैलाते हुए दिखाई देते हैं। आध्यात्मिक राज्य का उपदेश देना उसको स्थापित करने से बिलकुल जुदी ही वस्तु हैं। उपनिषदों ने प्राचीन वैदिक क्रियाकांड को ऊँचे अध्यात्मवाद से जोड़ने का प्रयास किया, किन्तु तत्कालीन पीढ़ी ने इसमें कतई अभिरुचि नहीं दिखाई। फलत: उपनिषदों का ऊँचा अध्यात्मवाद लोकप्रिय नहीं हो सका। इसने पूरे समाज को भी प्रभावित नहीं किया। एक ओर यह दशा थी, दूसरी और यांत्रिक धर्म अब भी बलशाली था। फल यह हुआ कि निम्न ज्ञान के द्वारा उच्च्व ज्ञान दलदल में फंसा दिया गया।

('जैनधर्म'- कैलाशचंद जी शास्त्री 373-74)

जैन, बौद्ध, आजीवक, गैरिक, तापस आदि (दशवैकालिक-पत्र 68) तथा रक्त पट, चरक, परिव्राजक, शैव, कापालिक (मूलाचार 5-62) ये अवैदिक संप्रदाय तथा सांख्य दर्शन अवैदिक संप्रदाय वैदिक धारा का विरोधी था। उसने श्वेताश्वतर, प्रश्न, मैत्रायणी इन प्राचीन उपनिषदों को प्रभावित किया था। उपनिषद् पूर्ण रूप से वैदिक धारा के ग्रंथ नहीं हैं। वैदिक साहित्य का मुख्य भाग यज्ञ है। समूचा यजुर्वेद उसी से युक्त है। श्रमण धारा व उपनिषद् धारा समान है। इसका प्रवाह अध्यात्म विद्या की ओर था। क्यों आए हैं, कहाँ जाएंगे आदि प्रश्न का विचार आध्यात्म विद्या से संबंधित है।

(केनोपनिषद्)

धर्म,अर्थ, काम इस त्रिवर्ग का कथन लौकिक साहित्य से संबंधित है। आचार्य शंकर के अनुसार ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुंडक, मांडूवय, तैत्तिरीय, ऐतरेय, छांदोग्य, वृहदारण्यक ये प्राचीन हैं और डॉ. वेलकर और रानाडे, छांदोग्य, वृहदारण्यक, ईश, कठ, ऐतरेय, तैत्तिरीय, मुडुक, कौषीत कि. केन प्रश्न दत उपनिषदों को प्राचीन मानते हैं।

(हिस्ट्री ऑफ इंडियन फिलासफी, भाग 2, पृ. 87-90)

यह पहले बतलाया गया है कि पराविद्या अध्यात्म या आत्म विद्या है जिससे ब्रह्म की प्राप्ति होती है। अपराविद्या वेद है (मुंडकोपनिषद् 2-5) प्रश्नोपनिषद् में बताया गया है कि ऋग्वेद के द्वारा साधक इस लोक को, यजुर्वेद द्वारा अंतरिक्ष को और सामवेद के द्वारा तृतीय ब्रह्म लोक को प्राप्त होता है।

छान्दोग्य उपनिषद् 6/5/1 तथा वृहदारण्यक 2/2/9-10 में आत्म यज्ञ की स्थापना का उल्लेख कर किसी अवैदिक धारा की ओर संकेत किया है। **वैदिक ऋषियों में उदारभाव और सर्वग्राही भावना भी रही है।**

मंडुक, छांदोग्य, आदि उपनिषदों में अनेक स्थल ऐसे हैं जहाँ श्रमण विचार धारा का प्रतिबिंब है। जर्मन विद्वान हर्टले ने यह प्रमाणित किया है कि मुंडकोपनिषद में लगभग जैन सिद्धांत जैसा वर्णन मिलता है।

वृहदारण्यक के याज्ञवल्क्य कुशीतक के पुत्र कहोल से कहते हैं, यह वही आत्मा है जिसे जान लेने पर ब्रह्मज्ञानी पुत्रैषणा, वित्तैषणा, लोकैषणा, इनसे मुँह फेरकर ऊपर उठ जाते हैं। एम.विण्टरनिट्ज ने अर्वाचीन उपनिषदों को अवैदिक माना है।

(प्राचीन भारतीय साहित्य पृ.190-191)

महाभारत, शांतिपर्व अध्याय 263 श्लोक 18-21 में लिखा है कि प्राचीन काल में ब्राह्मण सत्य यज्ञ और दम यज्ञ (इन्द्रिय विजय) का अनुष्ठान करते थे। वे परम पुरुषार्थ (मोक्ष) के प्रति लोभ रखते थे। उन्हें धन की प्यास नहीं रहती थी। वे उससे सदा तृप्त थे। वे प्राप्त वस्तु का त्याग करने वाले और इर्ष्या द्वेष से रहित थे। वे शरीर और आत्मा के तत्त्व को जानने वाले और आत्मयज्ञ परायण थे। वे वेद के अध्ययन में तत्पर रहते थे। स्वयं संतुष्ट थे और दूसरों को संतोष की शिक्षा देते थे।

अहिंसा सकलो धर्मोऽहिंसा धर्म स्तथा हितः।

(महाभारत शांतिपर्व अ. 272, श्लोक 20)

भारत से बाहर जैनधर्म

सर हेनरी सलिन्सन- के अनुसार मध्य एशिया के बलरव नगर का नया बिहार तथा ईंटों से निर्मित स्मारक-अवशेष वहाँ कश्यप के आने की सूचना देते हैं। कश्यप एक प्रसिद्ध जैन मुनि थे। मध्य एशिया के कियामिशि नगर (कैस्पिया) में सिंकदर के यूनानी सिपाहियों ने बहु संख्यक निर्ग्रंथ साधु देखे थे।

भगवान महावीर के पूर्व मध्य एशिया के कैस्पिया, अमना, समरकंद बलरव आदि नगरों में जैनधर्म फैला था। ई.पूर्व छठी शताब्दी में यूनान के इतिहासकार हेरोडोतस ने अपने इतिहास में एक ऐसे भारतीय धर्म का उल्लेख किया है जिसमें मांस निषेध था। जिसके मानने वाले शाकाहारी थे। 580 ई.पूर्व उत्पन्न दार्शनिक पैथेगोरस, जो भगवान महावीर का समकालीन था, जीवात्मा के पुनर्जन्म व आवागमन तथा कर्मसिद्धांत में विश्वास करता था। जीवहिंसा व मांसत्याग का उपदेश देता था। कुछ वनस्पतियों को अभक्ष्य मानता था। इस संप्रदाय के विचारक आयोनियन या आरफिल कहलाते थे। उक्त विचारों की समानता जैनधर्म से है यह बौद्ध या वैदिक मत से मेल नहीं खाता।

मेजर जनरल फ्लांग- का कथन है कि लगभग 1500 से 800 ई.पूर्व पर्यन्त, किन्तु इससे भी पूर्व संपूर्ण उत्तर, पश्चिम तथा मध्यभारत में तुरानियों (द्राविड़) का प्रभुत्व था। हमने इसके साथ ही एक ऐसा दार्शनिक सदाचार एवं नव प्रधान धर्म अर्थात् जैनधर्म प्रचलित था। जिसके आधार में अन्य धर्मों में सन्यास मार्ग विकसित हुआ।

एशिया के विभिन्न भागों में दक्षिण व पूर्व के सिंहलद्वीप (लंका) जावा, बोर्नियो, ब्रह्म आदि देशों में भारतीय उपनिवेश थे जहाँ भारतीय संस्कृति व धर्म के मानने वाले थे। अमन व मकसूदनिया में जैनधर्म था, चीनी यात्रियों ने वहाँ जैन साधुओं को होना लिखा है। यूनानी लेखक हिरोड़ोतस ने उत्तरी अफ्रीका के इथियोपिया में जैन साधु भ्रमण करते देखे थे। इस प्रकार उस काल में जैनधर्म एशिया के पश्चिम, मध्य व दक्षिण

पूर्व एवं अफ्रीका के उत्तरी भाग व यूनान में फैला हुआ था।

प्रसिद्ध जर्मन इतिहास लेखक वान्क्रमर के अनुसार मध्य पूर्व में प्रचलित 'समानिया' संप्रदाय श्रमण शब्द का अपभ्रंश है। इतिहास लेखक जी.एफ. मूर लिखते हैं कि हजरत ईसा की जन्म शताब्दी के पूर्व ईराक, श्याम, फिलिस्तान में जैन मुनि और बौद्धभिक्षु सैकड़ों की संख्या में चारों ओर फैले हुए थे।

'सियादत्त नाम नासिर' के लेखक लिखते हैं कि इस्लाम धर्म के कलन्दरी तबके पर जैनधर्म का काफी प्रभाव था। कलन्दर चार नियमों का पालन करते थे- साधुता, शुद्धता, सत्यता और (सात्विकता) दरिद्रता। वे अहिंसा पर अखंड विश्वास रखते थे।

इस संबंध में विश्वंभरनाथ पांडे ने 'अहिंसक परम्परा' लेख में लिखा था।

युनान में जैन-

यूनानी इतिहास से पता चलता है कि ईसा से कम से कम चार सौ वर्ष पूर्व दिगंबर भारतीय तत्त्वेत्ता पश्चिमी एशिया में पहुँच चुके थे, पोप के पुस्तकालय में एक लातीनी आलेख में, जिसका हाल में अनुवाद हुआ, पता चलता है कि ईसा की जन्म शताब्दी तक इन दिगम्बर भारतीय दार्शनिकों की एक बहुत बड़ी संख्या इथियोपिया (अफ्रीका) के वनों में रहती थी और अनेक यूनानी विद्वान वहाँ जाकर उनके दर्शन करते थे और उनसे शिक्षा लेते थे। यूनान के दर्शन और आध्यात्म पर इन दिगम्बर महात्माओं का इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि चौथी सदी ईसा पूर्व में प्रसिद्ध यूनानी विद्वान मिंटों ने भारत आकर उनके ग्रंथों और सिद्धांतों का विशेष अध्ययन किया। फिर यूनान लौटकर एलिस नगर में एक नई यूनानी दर्शन पद्धति की स्थापना की।

(खंड 2 पृ.128) (भारत और मानव संस्कृति-विश्वंभरनाथ पांडे)

आचार्य जिनसेन के महापुराण (9 वीं शताब्दी) के अनुसार दशम शीतलनाथ तीर्थंकर के समय में वैदिक आर्य भारत में पूर्व की ओर से फैलते हुए पंजाब से लेकर पश्चिमी उत्तर प्रदेश को अपना केन्द्र बना लिया। श्रमण शासक अंग, मगध तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश में सीमित होते चले गये।

मेसोपोटामिया की प्राचीन संस्कृति

ईसा से लगभग चार हजार वर्ष पहले मेसोपोटामिया में सभ्यता अपनी प्रारंभिक स्थिति से निकलकर निश्चित उन्नति की ओर कदम बढ़ा रही थी। मेसोपोटामिया को संस्कृति दृष्टि से हम तीन भौगोलिक हिस्सों में बांट सकते हैं। दजला और फिरात की पूर्वी भाग अथवा आधुनिक बगदाद आर ईरान की खाड़ी के बीच का हिस्सा काबुल और वैविलोनिया कहलाता था। इसके भूभाग में प्रागैतिहासिक काल से ही एक जाति बस गई थी जिसे इतिहास में सुमेरों जाति कहा जाता है। यह जाति कहाँ से आई इसके निश्चित ऐतिहासिक प्रमाण नहीं मिलते किन्तु सुमेरी भाषा और भारतीय द्रविड़ भाषाओं के साम्य को देखते हुए बहुत से इतिहासज्ञों का यह मत है कि सुमेरों जाति का संबंध दक्षिण भारत के द्रविड़ों से रहा होगा। इस बात के ऐतिहासिक प्रमाण मिलते हैं कि सुमेरों संस्कृति और सिंधु सभ्यता के केन्द्र मोहनजोदड़ो में गहरा आदान-प्रदान का संबंध था।

(भा.मा.सं.पृ. 90)

अन्य सभ्यताओं से संबंध-

पूर्व मेसोपोटामिया लेख में यह बतलाया था कि सुमेरी भाषा और भारतीय द्रविड़ भाषाओं के साम्य को देखते हुए इतिहासज्ञों का यह मत है कि सुमेरी जाति का संबंध दक्षिण भारत के द्रविड़ों से रहा होगा इस दृष्टि से सुमेरी सभ्यता के संबंध में यहाँ बताया जा रहा है।

सुमेरी सभ्यता ईराक की सर्वप्रथम सभ्यता थी। सिंध में मोहनजोदड़ो इराक में 'उर' और नीलनदी के किनारे 'अविदा' के पुराने खंडहरों को खोदकर पुराने इतिहास के अन्वेषकों के, ईसापूर्व पाँच हजार वर्ष पुरानी जो वस्तुएँ सामने हैं, उनसे ज्ञात होता है कि उस वक्त भारत, सुमेर और मिस्र तीनों सभ्यतायें परस्पर मिली हुई थीं। सुमेर दोनों के मध्य में था। उर इराक का सबसे प्राचीन शहर जहाँ सबसे पुरानी कब्रें, जिनमें वहाँ के राजाओं के पंजर व बहुमूल्य सामान मिले हैं, 3500 ई.पू. से पहले का माना जाता है। यह समय मिस्र के प्रथम राजकुल के सम्राट् मेनी के पूर्व का था।

'अविंदा' की खुदाई में उस समय की ऐसी वस्तुएँ मिली हैं जो सुमेरी वस्तुओं से मिलती हुई हैं। ये सब मेनी सम्राट् के समय की हैं। मेसोपोटामिया में ये मेनी के सैकड़ों वर्ष पूर्व से मिलती है।

जाहिर है मिश्र में ये नये लोग ऐशिरू से ही गये थे। सुमेरी और भारतीय कभी न कभी एक ही जाति थी। मेनी के समय में सुमेर की सभ्यता मिस्री सभ्यता से ऊँची थी। इराक में उर के पास के गांव में जो खुदाई हुई उसमें हिन्दुस्तान की मार्शल की मिट्टी के बर्तन मिलते हैं।

एक सींगवाली मूर्ति सुमेर के शक्ति के देवता अवनी से मिलती है। हड़प्पा के बाद के समय का एक सिंगारदान मिला है जो उर के पहले राजकुल के समय का उर में मिला है। मोहनजोदड़ो का एक खास शक्ल का घोड़ा इराक के निप्पर के एक घोड़े से मिलता है।

सर जान मार्शल लिखते हैं कि इस किस्म की मिलती जुलती चीजों को बहुत बढ़ाया जा सकता है। ये चीजें इस बात को साबित करने के लिए काफी हैं कि उस जमाने में यानी सरगन के पहले या सरगन के समय में हिन्दुस्तान और सुमेर में आना-जाना, लेना-देना, और सभ्यता की दूसरी बातों में गहरा संबंध था। सर जान यह भी लिखते हैं कि इन पुराने देशों में मार्शल मिट्टी के इन पुराने देशो में मिट्टी के बर्तनों के जो नमूने मिले हैं उनमें साबित होता है कि सिंधु, वलुचिस्तान और ईराक की संस्कृतियों का एक दूसरे से गहरा संबंध था।

सुमेरी जाति ने सर्वप्रथम दक्षिण मेसोपोटामिया पर कब्जा किया, वहाँ से वह उत्तर की ओर बढ़ी। इतिहासज्ञों की राय है कि सुमेरी काठियावाड़ से ईरान की खाड़ी के रास्ते इराक और मेसोपोटामिया पहुँचे। 1936 में काठियावाड़ में एक पुराना ताम्रपत्र मिला है, जिसमें वहाँ के निवासियों का नाम 'श' लिखा है। सुमेरी जाति का नाम शू है। काठियावाड़ का पुराना नाम सुराष्ट्र है। सुमेरी विद्वान थे। उनकी शारीरिक गठन भारतीय आर्यों की सी थी। सुमेर की भूमि अत्यंत उपजाऊ थी। उनका धंधा खेती था। उर की खुदाई से पता चलता है कि पुराने जमाने में भारत और सिंध से सुमेर का नजदिकी संबंध था। असूरिया में 2700 ई.पू. के सुमेरी मकान मिले हैं। शाम के उत्तरी हिस्से में 3000 ई.पू की बनी हुई सुमेरी सील पाई गई है।

उर के पहले राजकुल में पहले सुमेरी संस्कृति और सुमेरी सभ्यता अपनी स्थिति सुदृढ़कर ली थी, पूरे इराक पर सुमेर का राज्य था। उर में एक कब्रिस्तान मिला है। जिसकी प्रथम कब्रें ईसा से 3500 वर्ष पूर्व की है। कब्रों में शवों के साथ में बहुमूल्य वस्तुएँ रखी हुई मिली है उर की खुदाई में 5500 वर्ष पुराना एक राष्ट्रध्वज

मिला है। यह झंडा सीप और लाजवर्द का बना हुआ है उसमें अपूर्व चित्रकारी है। उर में अनेक राजकुलों ने राज्य किये। बीच में राजधानी उर के स्थान में अगारे नगर आ गई थी। फिर भी उर का महत्व कम नहीं हुआ। अनेक राजा हुए अनेक मंदिर बने। सुमेरी सभ्यता दूर-दूर तक फैली। यूरोप की सभ्यता सुमेरी विचारों की नींव पर ही कायम हुई है। बाईबिल से मालूम होता है कि पहले यहूदियों ने, बाद में उनके द्वारा यूरोप ने सुमेरी विचारों और विश्वासों को ग्रहण कर लिया। हजरत ईसा की दस आज्ञाओं की बुनियाद में सुमेरी आज्ञायें ही है। प्रसिद्ध विद्वान बूली लिखते हैं- कि इतिहास की खोजों से मालूम हुआ कि यूनान के जिज्ञासु हृदय ने लिविया से, खस्तियों से, फोजेशिया से, क्रेट से, वाबुल से, मिस्र से, भारत से ज्ञान की प्यास को बुझाया। ईसा से लगभग 1500 वर्ष पूर्व मानव संस्कृति के अंतर्गत यूनान का अध्याय जोड़ा गया। भारतीय, सुमेरी और मिस्री सभ्यता की किरणें क्रेट और सीरिया से यूनान पहुँची। प्रारंभ में यूनानी कबीले एक ही बोली और एक ही परम्परा में बंधे हुए थे। धीरे-धीरे आर्यों के जत्थे पर्वत श्रेणियों को पारकर दक्षिण की उपन्यकाओं में प्रविष्ट हुए और सैकड़ों वर्षों के अंतर में यूनान पहुँचे। प्रत्येक आगंतुक ने अपना धर्म और रीति रिवाज अलग-अलग स्थापित किया। इस तरह नये समाज की रचना में 7-8 शताब्दियाँ बीत गईं। यूनानी परिश्रमी थे। उनहें भारत, सीरिया, मेसोपोटामिया, क्रेट, से जो कुछ मिला, ग्रहणकर अपनी सभ्यता को दृढ़ किया। यूनान में सिंधु, नील, दजला और फिरातकी सभ्यताओं का मिश्रण हुआ। ईरान में सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक एकता होने से उसकी संस्कृति का जन्म हो रहा था। बाद में यूनानी जनतंत्र और ईरानी राजतंत्र में संघर्ष हुआ जिसमें ईरान को नम्र होना पड़ा। यूनानी जनस्वातंत्र्य में बाढ़ आ गई। यूनानी समाज में प्रत्येक क्षेत्र में उन्नति प्रारंभ हो गई। यूनान में 200 वर्ष के भीतर सोलनसरी, पेटीक्लीज सयाल ऊँचे राजनीतिज्ञ, पिथागोरस और सुकरात जैसे महान संत अफलातून और अरस्तू समान महान दार्शनिक, वुकरात समान रसायन शास्त्री, एचिल और सोफोक्लीज तुल्य साहित्यिक, ब्राइगो, फ्रिडिया और पलिगनीतु जैसे कलाकर एवं सिकंदर जैसे विजेता को जन्म दिया। यूनानी संस्कृति ने जल्दी ही अधिक उन्नत्ति कर ली। सामाजिक ढांचे की दुर्बलता के कारण उसका सूरज जल्दी डूब भी गया।

दर्शन और विज्ञान में सर्वप्रथम यूनान में 'थेली' का नाम आता है, वह यूनानी वैज्ञानिक और दर्शन शास्त्री माना जाता है। ज्योतिष, रेखागणित का भी वह प्रथम विद्वान था। उसके बाद उसके शिष्य पिथागोरस यूनानी दर्शन के विद्वान हुए। अफलातून, अरस्तु, सुकरात और सिकंदर तो विश्व प्रसिद्ध व्यक्ति हुए हैं। यूनानी जिज्ञासु और विद्वान मिस्र, ईरान आदि में जाकर वर्षों शिक्षा ग्रहण कर अपने देश को समृद्ध बनाया। महाकवि होमर यूनान का प्रसिद्ध था। एंथिल यूनान का महान नाटककार था।

यूनानी संस्कृति के बाद सभ्यता को उसकी देन बहुमूल्य और महत्वपूर्ण है। पिथागोरस और तीर्थंकर पार्श्वनाथ समकालीन थे। पिथागोरस भारत आया था। जब वह यहाँ से वापस गया उसने अहिंसा, सत्य एवं अचौर्य का व्रत लिया और केवल शुक्ल वस्त्र पहनना प्रारंभ किया।

ईसा से दो सौ वर्ष पूर्व मिस्र की राजधानी सिकंदरिया में तौरेत और यहूदी धर्मग्रंथों का यूनानी भाषा में अनुवाद हुआ। यहूदी ग्रंथ यूनानी भाषा में लिखे गये।

वह समय धार्मिक एवं सांस्कृतिक प्रसार का था। सिकंदरिया और पाटलीपुत्र में राजदूतों एवं दार्शनिक विद्वानों का आना जाना तथा व्यापार का संबंध भी हो गया था। पीछे बौद्धधर्म का पश्चिमी दुनिया में प्रचार प्रसार भी हो रहा था। बौद्धभिक्षुओं के सिवाय उन देशों में जिन्मोसोफिस्ट या हाइलोविदो, जिन का शब्दार्थ नंगे फिलास्फर या दिगम्बर तत्त्ववेत्ता एवं हाइलोविदो का अथ वानप्रस्थ है। ये लो शमन (श्रमण) कहलाते थे। जिनका यूनानी लेखकों ने वर्णन किया है, उसमें प्रकट है कि इनमें से अनेकों का संबंध जैनधर्म से भी था। इतिहास से यह स्पष्ट है कि जैन, बौद्ध और सनातन तीनों धर्म के विद्वान एक साथ उन दिनों दूर-दूर के देशों में जा धर्म प्रचार करते थे। यूनानी इतिहास से पता चलता है ईसा से कम से कम चार सौ वर्ष पूर्व दिगम्बर भारतीय तत्त्ववेत्ता पश्चिमी एशिया में पहुँच चुके थे। यूनान के दर्शन और अध्यात्म पर इन दिगम्बर मान्यताओं का इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि चौथी सदी ई.पूर्व में यूनानी विद्वान पिरों ने भारत आकर उन ग्रंथों और सिद्धांतों का विशेष अध्ययन किया।

भारत से लौटने के बाद पिरो दिगम्बर रहता था। वह योगाभ्यास करता था और निर्विकल्प समाधि में विश्वास करता था ई.पूर्व दूसरी सदी में 'ऐस्सेनी' सम्प्रदाय की यहूदियों में स्थापना हुई। इनका मुख्य सिद्धांत अहिंसा था। ये पशुबलि, मांस मदिरा सेवन के विरुद्ध थे।

ज्ञानविज्ञान और विद्या की दृष्टि से यहूदी जाति एक अत्यंत क्षमाशील है। यूनानियों ने उनके देश को पराधीन बनाया। इतिहास बताता है कि बाबुली सम्राट् हजारों यहूदियों को बंदी बनाकर दूर-दूर देशों में ले गए किन्तु उनकी स्वतंत्र भावनाओं को बंदी बनाने में सफल नहीं हुए। अरबों के भीषण हमलों से यहूदी छिन्न-भिन्न होकर सारी दुनिया में बिखर गये। नात्सियों के भयंकर अत्याचार भी उनके जातीय गुण को नष्ट नहीं कर सके। यहूदी एक विशुद्ध जाति बनी रही।

संसार की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक चीनी सम्यता भी मानी जाती है। जापानियों ने सभ्यता चीन से सीखी है। 1911 ई. में पुराने राजकुलों के विरुद्ध राज्यक्रांति होने से उनकी हुकूमत खत्म होकर जनतंत्र चीन स्थापित हो गया। मिस्र और काबुल की सभ्यताओं से भी पुरानी चीनी सभ्यता है। चीन में लिपि की दीर्घकालीनता विज्ञान का प्रारंभ, कागज, छपाई, कम्पास एवं बारूद काम प्रथम माना जाता है।

चीनी कौम का जन्मदाता हुआँग-ति (2700 ई.पू.) सम्राट् को मान जाता है। चीन का इतिहास उस समय से शुरू होता है।

महात्मा कन्फूशियस द्वारा संग्रहीत दो गीत उल्लेखनीय है :-

1. **जब सूरज निकलता है मैं उठ जाता हूँ**
   जब सूरज डूबता है मैं आराम करता हूँ
   पानी पीने के लिए मैं कुआ खोद लेता हूँ
   और खाना खाने के लिए जमीन जोतता हूँ
   सम्राट् की हुकूमत सम्राट् के पास रहे
   मुझे उससे क्यों लेना देना।

2. **ऐ खुश किस्मत बादल। फैला दो**
अपने रंगों को चारों तरफ
ऐ सूरज और ऐ चाँद! चमकाओ
और सुन्दर बनाते रहो
दिन और रात को हमेशा-हमेशा

भारत और चीन के लोग सदा से परस्पर मित्रता का व्यवहार करते आए हैं। जापानी विद्वान प्रो हाजिमें नाकामुरा, पी.एच.डी, टोकियो ने 'चीनी साहित्य में श्री ऋषभदेव' लेख में प्रकट किया है कि भगवान ऋषभदेव के व्यक्तित्व से जापानी भी अपरिचित नहीं हैं। चीनी साहित्य द्वारा उनका परिचय प्राप्त हुआ है। जापानी उन्हें रोक्शव नाम से पुकारते हैं।

आर्यदेव द्वारा रचित षट्शास्त्र का चीनी रूपांतर मिलता है। कपिल, कणाद, ऋषभ आदि भगवान कहलाते हैं। ऋषभ के शिष्यगण निर्ग्रन्थों के धर्म ग्रंथों का पाठ करते हैं। वे तपस्या करो, केशलोंच करो, उपवास करो आदि कहते हैं।

पुरातत्व और धर्म ग्रंथों से प्रमाणित होता है कि जैनधर्म अत्यधिक प्राचीन है।

जुलाई 42 के 'हिन्दुस्तान रिव्यू' में प्रो. तानयून शान ने लिखा है कि ''शीतराज्य (ई.पू. 246-227) से पूर्व भारत से बौद्ध धर्म चीन पहुँच चुका था।'' तानयुन शान के मतानुसार दोनों राष्ट्रों में सांस्कृतिक एकता का सूत्रपात आज से दो हजार वर्ष पूर्व ही हो गया था।

अशोक जैसे अंतराष्ट्रीय राजा के समय धर्म की सुगंध चीन भी जा पहुँची यह अनैतिहासिक नहीं जान पड़ती। इतिहास से पता चलता है कि चीन से फाहियान, हुएनसांग, इत्सिंग (675 से 695 तक) नालंदा में विद्यार्थी थे। ऐसे विद्वान भारत यात्री आए और भारत से ब्राह्मण कालीन कवयथ, मांतग, कुमार जीव श्रमण तथा गुनरल श्रमण जैसे प्रसिद्ध अनुवादक चीन गये। वहाँ संस्कृत से चीनी भाषा में लगभग 98 पुस्तकों का अनुवाद कश्यप मातंग ने किया। हुएनत्सांग 657 पुस्तकें भारत से ले गया था जिनमें से 75 पुस्तकों का अनुवाद कर सका। अमोघवज्र-उत्तर भारत का ब्राह्मण कुल का श्रमण सन् 710 ई. में चीन गया। वह भारत और लंका के शास्त्रों पर लगभग 500 हस्तलिखित पुस्तकें संग्रहीत करता रहा। उसे चीनी सम्राट् ने 'प्रज्ञा कोष' की उपाधि दी। कुमार जीव श्रमण, जो भारतीय श्रमण था, सन् 383 में चीन गया वहाँ पुस्तकों का अनुवाद करता रहा। उसकी 50 पुस्तकें उपलब्ध हैं। देव, दानपाल, दिवाकर, गौतम, धर्मदेव, धर्मनंदी, धर्मप्रिय, भरत, धर्मरक्षा, धर्मरूचि, नरेन्द्र, उज्जैन का परमार्थ, प्रभाकर, प्रमिति, बुद्धभद्र, मगध का मैत्रेय, रत्नमति, बज्रबोधि दक्षिण भारतीय श्रमण प्रज्ञा (हुई थी) भारतीय श्रमण, ज्ञानश्री भारतीय श्रमण ये सब चीन जाने वाले तथा, डॉ. राधाकृष्णन् की इण्डिया एंड चाइना पुस्तक के अनुसार अनेक नाम हैं जो चीन धर्म प्रचारार्थ गये थे। अजंता और एलोरा की चित्रकला के आदर्श ले जाने वाले भी चीन गये थे। एक समय राजधानी लोयांग में तीन हजार भारतीय योगियों के सिवाय दस हजार भारतीय परिवार जीवन यापन करते थे। भारतीय संस्कृति का प्रभाव चीन वासियों के जीवन के हर अंग पर समान रूप से पड़ा है।

महाभारत में चीन वासियों का वर्णन बहुत बार आया है। आदि पर्व, सभापर्व, उद्योग पर्व में चीनी सैनिकों का भारतीय सेना के साथ के उल्लेख हैं। रामायण में भी उल्लेख है।

चीनी यात्री फाहियान चौथी शताब्दी का एक प्रसिद्ध यात्री भारत आया था। चीन से वह पैदल रवाना हुआ उसकी समुद्र यात्रा में 15 वर्ष लगे जिनमें 9 वर्ष चलने में और बाकी पढ़ने में। तीस देशों की उसने यात्रा की।

जैसे चीन के बारे में कहा जाता है कि 10 हजार वर्ष पूर्व चीनी इतिहास के अनुसार योउत्साओं और सुएइजेन ने घर बनाना और लकड़ी जलाकर भोजन बनाना सिखलाया फिर धीरे-धीरे परिवार-विवाह के लिए नियम बनाये, जातियाँ बनी, इस तरह चीनी सभ्यता का निर्माण हुआ।

महाभारत आदि में चीन का वर्णन आता है भारत को चीन का पता व संबंध था। जापान इससे बहुत पीछे था। सैकड़ों जापानी चीन आए और वहाँ से शिक्षण प्राप्त कर अपने देशों में प्रचार प्रसार किया। जापान ने सभ्यता चीन से सीखी। ईसा की छठी शताब्दी में कोरिया होकर भारत से बौद्धधर्म का प्रवेश हुआ। कोरिया से लेखक, कवि, पत्रकार, चित्रकार आदि जापान पहुँचे। जापान में पुराने धर्म पूजा विधि, देवगण पर बौद्धधर्म प्रभाव पड़ने से परिवर्तन भी हुआ। पहले जापान में शिन्तों धर्म था शिंतो का सिद्धांत देवताओं के मार्ग पर चलना था। जापान में बौद्ध धर्म के महायान दर्शन का प्रचार प्रसार हुआ। वहाँ ईसा की प्रथम शती में बाहर देशों से मिष्ट फलादि भी लाये गये जिनसे नवीन फलाहार का प्रचार प्रसार हुआ। हिन्दूधर्म के शिव-पार्वती, गणेश, सरस्वती, सूर्य आदि का भी प्रचार हुआ। इनकी मूर्तियों का निर्माण हुआ।

ईसा की प्रथम शताब्दी में अश्वेत अफ्रीका के साम्राज्य थे। उनकी अपनी सभ्यता थी। वे जंगली नहीं थे। उनको मूर्तिकला, चित्रकला, आर्थिक योजना, अपने नियम विधान का ज्ञान था। वहाँ की राजधानी घना में सोनिन की फलां जाति का शासन था। वह देश नगर, सैनिक आदि से संपन्न था। वस्त्र निर्माण व आभूषण का भी प्रचार था। वहाँ निग्रो सभ्यता थी। इनमें समष्टिवाद प्रचलित था। यूरोप निवासियों ने उन पर अत्याचार कर उन्हें बदनाम कर दिया और अमरीका आदि में करोड़ों की संख्या में ले जाकर बेच दिया। वहाँ ईसाई धर्म का प्रचार भी किया गया।

(भारत और मानव संस्कृति के आधार पर)

मक्का में जैनमंदिर-

वास्तुकला मर्मज्ञ फर्ग्यूसन ने अपनी पुस्तक ने अपनी पुस्तक विश्व की दृष्टि में इस बात की पुष्टि की है कि मक्का में मोहम्मद साहब के पूर्व जैन मंदिर विद्यमान थे, किन्तु काल की कुटिलता से जब जैन लोग उस देश में नहीं रहे तो मधुपित के दूरदर्शी श्रावक मक्का से वहाँ पर स्थित मूर्तियों को ले आए थे जिनकी प्रतिष्ठा अपने नगर में करा दी गई जो आज भी वहाँ विद्यमान हैं। महाकवि रत्नाकर ने कन्नड़ काव्य 'भरतेश वैभव' में लिखा है कि सम्राट् भरत मक्का गये तो वहाँ के राजाओं ने भरत का स्वागत किया।

क्रमशः ......

गतांक से आगे..............

नियत और अनियत

–आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज

एक व्यक्ति ज्योतिष शास्त्री था। हर एक बात में ज्योतिष देखता था। गाँव वाले भी कहते थे कि कोई भी काम हो बस पंडित को दिखाओ, पंडितजी जो कहेंगे हम वही करेंगे। एक दिन क्या हुआ एक बच्चा नदी में गिर गया जब तक पण्डित ने ज्योतिष देखा कि बचेगा कि नहीं तब तक बच्चा मर गया। देखो इस समय पुरुषार्थ करना जरूरी था फिर ऐसे मौके पर जो नियत को देखता है उसकी नियत ही खराब है समझो। यहाँ तो पुरुषार्थ की मुख्यता है। आचार्य कहते हैं किसी काल में भले कोई कार्य नियत है तो भी आपको उसमें पुरुषार्थ की जरूरत है जो पुरुषार्थ को नकारता है वह निकम्मा है और मिथ्यादृष्टि है। उसे तो अपने पुरुषार्थ में संलग्न रहना चाहिए। हाथ पर हाथ रखकर नहीं बैठता है कि जब जो होना होगा सो हो जायेगा। जिस काल में नहीं; वह नियत होगा तो वैसा हो जायेगा भले; लेकिन मुझे पुरुषार्थ करना है। मैं क्या केवलज्ञानी हूँ? प्रत्यक्ष ज्ञानी हूँ जो मैंने जान लिया कि ये नियत है। अगर नहीं हैं हम ऐसे ज्ञानी तो पहले पुरुषार्थ करें और पुरुषार्थ करने के बाद भी काम न हो तो समझो कि यह नियत है। इस कार्य में दैव कर्म की मुख्यता है। लेकिन दैव की प्रबलता न होने पर हम कभी-कभी कर्मों की उदीरणा को बचा लेते हैं। कभी कर्मों को उदय में लाते हैं कभी संक्रमण भी कर देते हैं। ये अवस्थायें भी होती हैं, नहीं होती तो फिर दस करणों की व्यवस्था क्यों बनाई। दसकरण बताये गये हैं जिनमें निधत्ति, निकाचित करण भी होते हैं जिनमें कर्म सरलता से क्षय को प्राप्त नहीं होते हैं। कुछ कर्मों में तो उत्कर्षण, अपकर्षण अवस्था हो जाती है। क्षय को प्राप्त भी हो जाते हैं। उदीरणा भी होती है- उदीरणा के लिए ''अकाल विपाको उदीरणा'' ऐसा शब्द आता है शास्त्रों में। अकाल में कर्म का फल चखना, चखाना सो उदीरणा है मान लीजिए कि कोई कफ का रोगी है। डॉक्टर ने कह दिया कि उसे दही नहीं खाना है फिर भी वह दही खाये तो ये अकाल में असाता कर्म की उदीरणा करवाना है। सर्दी खांसी का रोग अकाल में आ जायेगा। इसी तरह माना कि किसी को किसी वस्तु से सर्दी हो जाती है या ज्यादा केले खाने से सर्दी हो जाती है उसे मना किया फिर भी केले खा रहा है मानो कि वह असाता कर्म की उदरणा कर रहा है। फिर उस समय दु:खी होने से तो और कर्म बंधेगा। असाता वेदनीय का क्षय करना है तो धूप में बैठ जाओ, धूप को सहो, गर्मी को सहो और ठंडी सहो। मुनिराज यही तो करते हैं; 32 अन्तरायों का नियम स्वयं ने लिया है। बाल आ गया, कंकड़ आ गया हो समता पूर्वक अन्तराय कर देते हैं; क्योंकि कर्मों को खपाना है जल्दी-जल्दी। उदीरणा करा करके कर्मों को निकाल देते हैं। नहीं तो कब उदय में आयेंगे। ऐसे कर्मों की स्थितियाँ बहुत तरह की है कर्म सिद्धान्त बहुत बड़ा है। आप अनेकान्त धर्मी बनो। 'अनेके अन्त: धर्म: यस्मिन स: अनेकान्त:' अर्थात् जिसमें अनेक गुण धर्म या अवस्थाएँ होती हैं वह अनेकान्त कहलाता है। नियत की भी कुछ पर्यायें हैं। अनियत की भी कुछ पर्यायें हैं। हमें तो पुरुषार्थ की जरूरत है। पुरुषार्थ हमेशा करना है। चाहे वह बाद में नियत भी क्यों न हो।

आपको पुरुषार्थहीन कभी नहीं बनना। नहीं तो आप सम्यग्दृष्टि कभी नहीं कहलायेंगे। हम कैसे जान सकते हैं कि ये पर्याय नियत ही है ? पुरुषार्थ जरूर करना चाहिए। अनेकान्त वास्तविक धर्म है। उसको अपने जीवन में लायें। कई लोग एकान्तवादी बन रहे हैं, मिथ्याभावी बन रहे हैं। जैसे लहर चलती है तो अंग अकड़

जाते हैं कभी लू लग जाती है तो फिर क्या हो जाता? हाथ पैर लड़खड़ाने लग जाते हैं। ऐसे ही ये एकान्त की लहर या लू है इससे बचें।

वहाँ विकृत मुद्रा वाले मुनिराज के निकट ज्यों ही राजा श्रेणिक गये और कहा हे मुनिराज! आप धन्य हो, महान हो, आपने कितना त्याग किया है। घर छोड़ा, परिवार छोड़ा, शरीर से भी मोह छोड़ दिया, आपने तो सब कुछ छोड़ दिया। परम वीतरागी आपको तो कुछ विकल्प ही नहीं है। अपने परिवार का क्या हो रहा है? कुटुम्ब का क्या हो रहा है? सब अपने अपने कर्मों का फल भोगते हैं। पिता, पत्नि, बेटा ये सब संयोग सम्बन्ध हैं। इनका एक दिन वियोग तो निश्चित ही है, हम किसी का क्या कर सकते हैं? आपका इतना महान पुण्य कर्म था कि आप इस पद पर आये हैं। इस महान पद को तो तीन लोक के जीव भी नमस्कार करते हैं। ऐसा पंच परमेष्ठी पद आपने प्राप्त किया है, हे प्रभु! घर की चिन्ता क्या; आपको तो अपने शरीर की भी चिन्ता नहीं है धन्य-धन्य-धन्य और इतना कहते ही तुरन्त मुनिराज के अन्दर चिंतन आने लगा कि अरे! मैं तो मुनि हूँ और मैं क्या चिन्ता कर रहा हूँ अरे! परिवार की चिन्ता; नहीं, नहीं। जहाँ देह अपनी नहीं वहाँ अपना और क्या?

तुरन्त ऐसा चिन्तन कर आत्मा ध्यान में लीन हो गये। जैसा कि समयसार में आचार्य कुन्द कुन्द कहते हैं-

एगो मे सासादो आदा, णाण दसंण लक्खणो।
सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संयोग लक्खणा॥

इतना विचारते ही उनके अन्दर इतनी एकाग्रता आ गई कि अन्तर्मुहुर्त्त मात्र में उन्हें केवलज्ञान हो गया। वे केवली बन गये, गंघकुटी की रचना हो गई। उन मुनि महाराज का नाम था "धर्मरुचि महाराज"। पढ़ो पुराणों में सब कुछ लिखा है।

अगर राजा श्रेणिक ने प्रश्न न पूछा होता और आ करके समझाया न होता और वे ऐसा सोचते रहते तो नरक आयु का बंध हो जाता। ज्यों ही राजा श्रेणिक ने संबोधा तो वे आत्म चिंतन में लीन हो गये, केवलज्ञानी बन गये। देखो स्तुति के रूप में सम्बोधन दिया। कैसे स्थितिकरण किया जाता है, सम्बोधन किया जाता है? इस बात को आज के लोग समझते नहीं हैं। वाणी में मधुरता होनी चाहिए। हर समय कुछ पुरुषार्थ करें। कोई रोगी हो तो दवा करना कोई डूबता हो तो तुरंत बचायें न कि ज्योतिष देखने जायें। नहीं तो हो जायेगा काम तमाम। नियतवाद के एकान्त को पकड़कर मिथ्यादृष्टि मत बनो। सम्यक्त्व धर्म की रक्षा के लिए हर समय पुरुषार्थी बनकर आत्महित का कार्य करो।

अन्त में लोक प्रचलित चार पंक्तियाँ हैं कि-

चारों ओर कषायों का प्रभाव गहरा है।
सपनों के तट पर यह मानव ठहरा है॥
जीवन के रहस्य को कैसे समझे मानव।
मानव के जीवन पर पुण्य व पाप का पहरा है॥

- महावीर भगवान की जय -

पं. श्री मूलचंद लुहाडिया का देव लोक गमन

श्रद्धेय पं. मूलचन्दजी लुहाड़िया
जन्म : 2 दिसम्बर, 1929
समाधि : 14 सितम्बर, 2019

आचार्यश्री आर्जवसागरजी के आशीर्वाद व प्रेरणा से प्रकाशित होने वाली भाव-विज्ञान पत्रिका के परामर्शदाता एवं जैन जगत् के मूर्धन्य विद्वान जाने माने उद्योगपति वैराग्य धारण करने वाले किशनगढ़ समाज भूषण पं. मूलचन्द लुहाड़िया का सिद्धोदय सिद्ध क्षेत्र नेमावर में आचार्य गुरुवरश्री विद्यासागरजी महाराज के सान्निध्य में दिनांक 14 सितम्बर 2019 को अत्यंत शांत परिणामों के साथ देवलोक गमन हो गया। पं. मूलचन्दजी लुहाड़िया का जन्म 02 दिसम्बर 1929 को ग्राम नरेना में श्री सुवालालजी एवं श्रीमती केवल देवी के यहाँ हुआ। पंडित जी का सम्पूर्ण जीवन अत्यन्त सात्विक रहते हुए वे अपने जीवनकाल में धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं में अग्रणी थे। पंडितजी आचार्य गुरुवरश्री ज्ञानसागरजी महाराज एवं आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के अनन्य भक्त थे। आचार्यश्री विद्यासागर जी के वर्षायोग एवं ग्रीष्म कालीन वाचनाओं में ठहरकर चौका लगाने वाले एवं आचार्यश्री आर्जवसागर के जयपुर से किशनगढ़ के विहार में चौका लगाने वाले और वर्षायोग का आग्रह करने वाले सच्चे मुनि भक्त थे ऐसे लुहाड़ियाजी। इनकी धार्मिक रुचि के साथ-साथ उन्होंने समाज एवं धर्म हित में कई लेख भी लिखे जो समय-समय पर विभिन्न धार्मिक पत्रों में प्रकाशित हुये। पंडितजी कई वर्षों तक जिन भाषित पत्रिका के संपादक भी रहे। उन्हें मुनिश्री प्रमाणसागरजी के सान्निध्य में सकल दिगम्बर जैन समाज किशनगढ़ द्वारा 'समाज भूषण' की उपाधि से अलंकृत किया गया। पिछले लगभग 25 वर्षों से नियमपूर्वक एक समय भोजन करते हुये उन्होंने 2015 तक 2 प्रतिमाओं से 7 प्रतिमाओं के पालन का सफर तय किया जिसमें आगे आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज भोपाल के चातुर्मास के दौरान सन् 2016 में नौ प्रतिमाओं का व्रत लेकर ब्रह्मचारी वेशभूषा धारण की। 7 अप्रैल 2019 को गुलगांव में मुनिश्री सुधासागरजी से आजीवन अन्न का त्याग लिया। 12 अप्रैल 2019 को जबलपुर में आचार्यश्री से दशम् प्रतिमा का व्रत अंगीकार कर केवल पेय पदार्थ लेने का नियम लिया। अगले ही दिन 13 अप्रैल 2019 को रहली ग्राम में मुनिश्री समयसागरजी महाराज से आजीवन शक्कर के त्याग का नियम लिया। इस तरह उनकी सल्लेखना पूर्वक समाधि यात्री की शुरुआत हुई। दिनांक 26 जुलाई 2019 को उन्होंने सम्पूर्ण गृह त्याग कर बिजोलिया में विराजमान मुनिश्री सुधासागरजी एवं बावनगजा में विराजमान मुनिश्री प्रमाणसागरजी महाराज के दर्शन करते हुए 29 जुलाई 2019 को संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के पास सिद्धोदय सिद्ध क्षेत्र नेमावर पहुँच कर उनके स्वयं को उनके सान्निध्य में आगे की समाधि यात्रा करने हेतु समर्पित कर दिया। तब से उनकी समाधि दिनांक 14 सितम्बर 2019 तक की 48 दिनों की यात्रा में उन्होंने 42 उपवास किये जिसमें 7 उपवास निर्जल थे। दिनांक 14 सितम्बर 2019 को प्रात: आचार्यश्री के दर्शन एवं आशीर्वाद प्राप्त करने के तुरंत पश्चात् 9:55 पर उनको समाधि मरण की प्राप्ति हुई।

वे लगभग 35 वर्षों से सन् 2018 तक दिगम्बर जैन समाज किशनगढ़ (आदिनाथ दिगम्बर जैन पंचायत)

के अनवरत् अध्यक्ष रहे। उन्होंने अपने जीवनकाल में आचार्यश्री के निर्देशानुसार लगभग 15 वर्षों तक हर वर्ष दस लक्षण पर्यूषण महापर्व के दौरान अलग-अलग स्थानों पर जाकर वहाँ के जैन समाज के मध्य धार्मिक प्रवचन किया एवं स्वाध्याय कराया। इन्हें समय-समय पर महामहनीय मेघाविद्, महान विद्याराधक, निरतिचार व्रती, आगमनिष्ठ मानवीय गुणों की मूर्ति, सम्यक् दृष्टि श्रावक, अभीक्षण ज्ञानोपयोगी, सेवामूर्ति, कुशल नेतृत्व, माँ वीणापाणी के वरद पुत्र, जैन जगत् के प्रख्यात प्रकांड विद्वान आदि आदि उपाधियों से नवाजा गया। उन्होंने अनेक धार्मिक शिक्षण शिविरों का भी सफलता पूर्वक आयोजन किया।

सन् 1979 में सिटी रोड स्थित आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर के पंचकल्याणक के लिये आचार्यश्री को किशनगढ़ लाने में भी इनकी अहम् भूमिका रही। दिनांक 16 सितम्बर 2019 को सकल दिगम्बर जैन समाज किशनगढ़ द्वारा आर.के. कम्यूनिटी सेंटर किशनगढ़ में एक विनयाज्जली सभा का आयोजन किया जिसमें आर्यिका विज्ञाश्री माताजी, आदिनाथ पंचायत अध्यक्ष प्रकाशचन्द गंगवाल, मुनिसुव्रतनाथ पंचायत अध्यक्ष विनोद पाटनी, प्राणेश बज, अर.के मार्बल परिवार की सुशीला पाटनी, राजेन्द्र कासलीवाल, डॉ. संतोष गोधा, सांसद भागीरथ चौधरी, विधायक सुरेश टांक, वासुदेव देवनानी, महावीर कोठारी एवं जैन गजट के राष्ट्रीय संवाददाता शेखर जैन ने पंडित जी का गुणानुवाद करते हुये विनयाज्जली प्रेषित की।

समाधिस्थ पं. मूलचन्दजी लुहाड़िया जाप अनुष्ठान में तल्लीन

सल्लेखना के दौरान संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज पं. मूलचन्दजी लुहाड़िया को संबोधित करते हुए।

(भजन)

गुरुवर के ज्ञान की महिमा बड़ी विशाल......

लय-कुंडलपुर में बन रहा मंदिर ये बेमिसाल

'आर्जव' गुरु के ज्ञान की, महिमा बड़ी विशाल।
गुरुवर के चरण कमल में, वन्दन करें त्रिकाल॥ 1॥
'आर्जव' गुरु......................आर्जव गुरु को हो नमन.... गुरुचरणों में मम् वन्दन......
बचपन में तुमने घर द्वार को है तज दिया।
यौवन को तज के तुमने वैराग्य धर लिया॥
गुरुवर के चारित्र की जग में नहीं मिशाल,
गुरुवर के चरण कमल में वन्दन करें त्रिकाल॥ 2॥
'आर्जव' गुरु......................आर्जव गुरु को हो नमन.... गुरुचरणों में मम् वन्दन......
निज आत्मा को तुमने, मन में बिठा लिया।
तप ध्यान को ही तुमने जीवन बना लिया॥
गुरु ने मुनित्व अपने मन में लिया बिठाल,
गुरुवर के चरण युगल में वन्दन करें त्रिकाल॥ 3॥
'आर्जव' गुरु......................आर्जव गुरु को हो नमन.... गुरुचरणों में मम् वन्दन......
ले एक वर्ष मौन व्रत, अध्यात्म को ध्याये।
महावीर की प्रतिमूर्ति बन, भक्तों में समाये॥
गुरुवर की तपस्या है, कितनी महा विशाल,
गुरुवर के चरण कमल में वन्दन करें त्रिकाल॥ 4॥
'आर्जव' गुरु......................आर्जव गुरु को हो नमन.... गुरुचरणों में मम् वन्दन......
आचार्य बनके गुरु में लघुता निरत दिखी।
झरने से बनके सागर कीनी सतत् भली॥
गुरुवर परम गुणों की जग में नहीं विशाल,
गुरुवर के चरण कमल में वन्दन करें त्रिकाल॥ 5॥
'आर्जव' गुरु......................आर्जव गुरु को हो नमन.... गुरुचरणों में मम् वन्दन......

इंजीनियर बहिन ऋषिका जैन, दमोह

भजन

तर्ज-सुख का दाता...
गुरु की छाया, गुरु का आशीष,
मिलना ये वरदान है।
संयम तप में लीन सदा ये,
'आर्जवगुरु' महान हैं।

सुख दुःख में ये तारणहारे, भव्यों के आधार हैं,
पंचाचार के पालनहारे, निज में करते ध्यान हैं।
जैनागम का ऽऽऽ संस्कार ये, अद्भुत कृति महान है,
महावीर सम चर्या वाले, 'आर्जवगुरु' महान हैं॥ 1॥

गुरु की छाया.....

गुरुवर महिमा गाऊँ कैसे, मम शब्दों में जोर नहीं।
सारी दुनिया मैंने ढूँढ़ा, गुरुवर तुमसा कोई नहीं।
सोलहकारण ऽऽऽ करवाते, मम गुरु की ये पहचान है,
करुणा, ममता की मूरत ये, 'आर्जवगुरु' महान हैं॥ 2॥

गुरु की छाया.....

महाकाव्य तीर्थोदय से ये जिनवाणी को गाते हैं।
ऐसे गुरुवर के गुण गाकर, चरणों शीश झुकाते हैं॥
धर्मप्रभावक ऽऽऽ गुरुवन्दन मम, कोटि-कोटि प्रणाम है।
अमृतवाणी वर्षाते ये, 'आर्जवगुरु' महान हैं॥ 3॥

गुरु की छाया.....
संयम तप में......

इंजीनियर बहिन ऋषिका जैन, दमोह

भक्ति करना है तो करो वैसी, सदा मैनासुन्दरी जैसी।
छल कपट रख न करो भक्ति, वरना पाओगे गति रावण जैसी॥
कहो मत ऐसा, कौन देखेगा जग में, मेरे इस छुपे अंतरंग को।
हो भाव शुद्धि, प्रभु देखे, सदा जगत के रंग-ढंग को॥

-आचार्यश्री आजर्वसागरजी

दिवाली

सब माने बात बुजुर्गों की,
कीमत हो खून-पसीनों की,
सब कर ले कदर तजुर्बे की।
गरिमा हो पर्दानसीनों की ॥ 1 ॥
खेतों की तरह रखवाली हो।
देखो ! फिर रोज दिवाली हो ॥

''अतिथि देवोभव'' हो द्वारों पर,
चर्चा हो गर्व-सम्मानों की।
श्रद्धा हो सत्य-अहिंसा पर,
ना जरूरत हो शस्त्र सामानों की ॥
सब ओर खुशी-खशहाली हो।
देखो ! फिर रोज दिवाली हो ॥

स्वस्थ रीति हो स्पर्द्धा की,
मान्य सीमा हो अनुशासन की।
निष्ठा में ना कोई दोष लगे,
और मर्यादा हो आसन की ॥
बस तू कहना ही गाली हो।
देखो ! फिर रोज दिवाली हो ॥

भारत भूमि पर जन्म मिले,
जीवन अहंकार से रीता हो।
सुगम सरल हो अल्हड़ बचपन,
पर युवा संयम में जीत हो,
निर्भयता बचपन वाली हो।
देखो ! फिर रोज दिवाली हो ॥

नित व्यायाम, नित आसन हो,
पहले उठें, फिर सूर्योदय हो।
मंद पड़ जाएं थक कर पैर,
पर समता हो, सर्वोदय हो ॥
चल सीधी और निराली हो।
देखो ! फिर रोज दिवाली हो ॥

ना दगा-कपट, ना चोरी हो।
पहरे में सदा कड़ाई हो।
पचपन में बचपन लौट आए,
ना क्रोध हो, ना लड़ाई हो ॥
ना लेवाली हो, न देवाली हो।
देखो ! फिर रोज दिवाली हो ॥

लेखक : हनुमान सिंह गुर्जर
जिला परिवहन अधिकारी, कोटा
9414570200, 9588011079

सौभाग्य जागा अशोका गार्डन का

मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल नगर के अशोकागार्डन के भव्यों को अध्यात्म योगी आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज ससंघ चातुर्मास का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जिसमें 16.7.19 तारीख को गुरुपूर्णिमा दिवस पर गुरुवर का पादप्रक्षालन व शास्त्र दान का सौभाग्य विनोदकुमार जैन अजमेर वालों को प्राप्त हुआ और संगीतमयी पूजन व श्रावकों के द्वारा भक्ति भाव पूर्वक सम्पन्न की गयीं। पश्चात् गुरुवर के मंगल प्रवचन हुये। पश्चात् 17 तारीख को गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागरजी के ससंघ ने उपवास पूर्वक वर्षायोग प्रतिष्ठापन की भक्तियों का वाचन कर चारों दिशाओं में सीमा बांधकर चातुर्मास की स्थापना सम्पन्न की। तदुपरान्त 21.719 तारीख रविवार को सुबह सजी हुई द्रव्यों से गुरुपूजन सम्पन्न हुई और गुरुवर के मंगल प्रवचन हुये।

दोपहर में चातुर्मास मंगलकलश स्थापना का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। जिसमें सर्वप्रथम पाठशाला के बच्चों द्वारा मंगलाचरण की प्रस्तुति दी गयी। पश्चात् चित्र अनावरण एवं दीपप्रज्वलन अशोकागार्डन मन्दिर कमेटी एवं बाहर से पधारे अतिथियों द्वारा सम्पन्न हुआ और गुरुवर के पादप्रक्षालन का सौभाग्य ब्र. राजकुमार जी परिवार राहतगढ़ व श्री प्रवीणकुमार परिवार दमोह वालों को प्राप्त हुआ। पश्चात् बाहर दिल्ली, तमिलनाडु, सूरत, दमोह, जबलपुर, सागर आदि से पधारे अतिथियों का सम्मान किया गया व उनके द्वारा श्रीफल भेंट किये गये। पश्चात् चातुर्मास कलश हेतु पात्रचयन किया गया। जिसमें प्रमुख कलश आनंदकुमार टेंकर परिवार अशोकागार्डन वाले व अन्य पन्द्रह कलश का भी पात्रचयन किया गया। इसी बीच वर्तमान विधायक विश्वास सारंग अपने साथियों के साथ आचार्य गुरु दर्शन के लिए आये और अपनी बात व्यक्त करते हुए सन्त साधुओं की महिमा गायी। भोपाल के उपनगरों से भी अयोध्या नगर, चौक, नेहरू नगर, पंचशील नगर, टी.टी. नगर, बावड़िया कलाँ, सोनागिर, पिपलानी, मण्डीदीप आदि स्थानों से अधिक संख्या में लोगों ने पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। पश्चात् अंत में आचार्य गुरुवर की मंगलमय वाणी सबको प्राप्त हुई। तदुपरान्त मन्दिर में कलशों की स्थापना का कार्यक्रम अपार जन समूह के बीच मंगलमय सानन्द सम्पन्न हुआ। मन्दिर प्रांगण में बने पाण्डाल में प्रतिदिन गुरुवर के मंगलप्रवचन सम्यक् ध्यान शतक पर सम्पन्न हुये और आचार्य संघ द्वारा दोपहर में छहढाला, सहस्रनाम, तत्त्वार्थसूत्र, आदि व शाम को गुरुभक्ति, आरती आदि के पश्चात् प्रश्नमंच और स्तोत्रों के पाठ सह उनके अर्थ आदि कक्षाओं के माध्यम से श्रावकों को धर्मध्यान का सौभाग्य दिया गया।

दिनांक 7.8.19 को मोक्षसप्तमी के दिन मूलनायक श्री भ. पार्श्वनाथ का मोक्षकल्याणक दिवस विशेष पूजन एवं निर्वाण लाडु चढ़ाकर हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। और गुरुवर के मंगलप्रवचन पार्श्वनाथ भगवान के जीवन दर्शन पर आधारित थे और शाम को गुरुभक्ति, आरती के उपरान्त पार्श्वनाथ भगवान पर प्रश्नमंच किया गया।

दिनांक 15.8.19 को रक्षाबंधन पर्व व षोडसकारण महापर्व महोत्सव प्रारम्भ का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। जिसमें अकम्पनाचार्य आदि 700 मुनियों की पूजन एवं श्रेयांसनाथ भगवान के मोक्षकल्याणक के उपलक्ष्य में पूजन के साथ निर्वाण लाडू संगीतमय भक्ति भाव पूर्वक सम्पन्न किया गया। पश्चात् षोडसकारण

पर्व के मंगलकलश स्थापना का पात्रचयन हुआ। जिसमें श्री परितोश अमिता जैन सोना मेडिकल वालों को व दूसरा कलश सचेन्द्र जैन गुड्डू को सौभाग्य प्राप्त हुआ। पश्चात् गुरुवर ने रक्षा बंधन पर्व पर मंगलप्रवचन दिये। शाम को इसी के ऊपर प्रश्न भी पूछे गये। अशोकागार्डन में करीब 70-80 लोगों ने षोडसकारण व्रत ग्रहण किये। षोडसकारण में प्रतिदिन सामूहिक संगीतमय पूजन हुई तथा सोलहकारण भावनाओं पर आचार्यश्री के विशेष मंगलमय प्रवचन हुये। 1 सितम्बर को चा.च. आचार्यश्री शान्तिसागरजी महाराज के समाधि दिवस पर भी आचार्यश्री के विशेष प्रवचन हुये। 3 सितम्बर से पर्यूषण पर्व प्रारम्भ हुआ जिसमें प्रतिदिन दैनिक व पर्व पूजन के साथ-साथ दशलक्षण महामण्डल विधान सम्पन्न हुआ और प्रात: आचार्यश्री के दशधर्मों पर विशेष प्रवचन व दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र का वाचन, व तत्त्वार्थसूत्रसार्थ विशेष विवेचन आचार्यश्री के मुखारबिन्द से सम्पन्न हुये। 14 व 15 सितम्बर को आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज से रचित लोककल्याण महामण्डल विधान (षोडसकारण वृहद् आराधना) सम्पन्न हुआ। जिसमें बहुत लोगों ने इस विधान में बैठकर सरल सरस शब्दों से भरी प्रभु की भक्ति की और कुछ लोगों ने षोडसकारण व्रत का उद्यापन भी सम्पन्न किया। इस विधान पुस्तक का मुद्रित करने का सौभाग्य षोडसकारण व्रत उद्यापन के उपलक्ष्य में डॉ. अजित कुमार-सुषमा जैन भोपाल परिवार को प्राप्त हुआ। 15 सितम्बर को प्रात:कालीन बेला में क्षमावाणी पर्व भी मनाया गया। 22 सितम्बर को श्री जी की शोभायात्रा बेण्ड बाजे व दिव्यघोष, आचार्यश्री के ससंघ व अपार जनसमूह के साथ नगर के मुख्य मार्गों से होते हुए अपूर्व धर्मप्रभावना हुई। पश्चात् जुलूस पाण्डाल पहुँचा और वहाँ पर जिनाभिषेक व शान्तिधारा आचार्यश्री के मुखारबिन्द से सम्पन्न हुई तथा सामूहिक क्षमावाणी मनाई गई। जिसमें विधायक विश्वास सारंग, पार्षद आदि ने सभा में आकर सबसे क्षमा याचना की। अन्त में आचार्यश्री के क्षमावाणी पर विशिष्ट प्रवचन सम्पन्न हुये।

काव्य संगोष्ठी व पाठशाला सम्मेलन-

दिनांक 2 अक्टूबर को प्रात:काल धार्मिक कवि संगोष्ठी सम्पन्न हुई जिसमें बाल, युवा, प्रौढ़ कवियों ने स्व लिखित कविताओं का पाठ किया। अन्त में सबको पुरस्कारित भी किया गया और गुरुवर ने भी अपनी कविताओं को प्रस्तुत किया। दोपहर में धार्मिक पाठशाला सम्मेलन का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। अशोकागार्डन की पाठशाला द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत हुआ। पश्चात् अनेक पाठशालाओं के शिक्षक-शिक्षिकाओं द्वारा आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज का चित्र अनावरण व दीप प्रज्वलन किया गया। शंकराचार्य नगर ऐशबाग, अशोकागार्डन, पंचशील नगर, चौक, औबेदुल्लागंज आदि स्थानों की पाठशालाओं ने अपना-अपना शिक्षाप्रद कार्यक्रम प्रस्तुत किया। अन्त में गुरुवर के मंगल प्रवचन हुये और प्रथम स्थान में शंकराचार्य नगर की श्री विद्यासागर बाल संस्कार केन्द्र ने पाया। द्वितीय स्थान अशोकागार्डन श्री विद्यासागर पाठशाला को और तृतीय स्थान पंचशील नगर की श्री महावीर आगम पाठशाला ने प्राप्त किया। सभी को मोमेन्टो व विशेष पुरस्कार से पुरस्कारित किया गया।

दीक्षा की तैयारियाँ-

9 अक्टूबर को दोपहर में दीक्षार्थियों के द्वारा चौंसठ ऋद्धि विधान सम्पन्न किया गया। इसके पहले से

ही दीक्षार्थियों की गोद भराई हेतु लोग चंदन नगर, बावड़िया कलाँ, पंचशील नगर, ओबेदुल्लागंज, आदि-आदि स्थानों पर ले गये और 9 तारीख दीक्षा को देखने आये। श्री चक्रेश भैयाजी मुंडेरी वालो ने भी दीक्षा हेतु आचार्यश्री से निवेदन किया और दूसरे दिन प्रातः केशलोंच भी कर लिये। दोपहर में सबको मेहंदी रचाई गई और शाम को गुरुभक्ति के बाद ब्र. संतोष भैया अमरावती ने भी दीक्षा हेतु निवेदन किया। पश्चात् उनको भी मेंहंदी लगायी गई। रात्रि में 8:00 बजे विशाल जुलूस के रूप में राजकीय वेशभूषा में गाजे-बाजे के साथ एक अनुपम दृश्य स्वरूप दीक्षार्थियों की बिनोली अशोकागार्डन के मुख्य स्थलों से होकर पण्डाल पहुँची। पाँचों दीक्षार्थियों को मंचासीन किया गया और वहाँ पर अपार जनता की उपस्थिति में उनकी गोद भराई का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। उन दीक्षार्थियों के परिवार वालों ने पहले गोद भराई की पश्चात् सम्पूर्ण समाज ने भी गोद भराई का सौभाग्य प्राप्त किया। लोगों में अपूर्व उत्साह था, आनंद भी उमड़ रहा था। पहली बार हम लोगों को मात्र नहीं अपितु अनेक प्रान्तों से आयी जनता को यह दीक्षायें देखने मिल रही हैं। सबके मन में अपार खुशियाँ छा गई थीं।

पाँच पापों का त्याग कर बने साधु परमेष्ठी-

प्रात:काल 4:00 बजे सभी दीक्षार्थियों ने केशलोंच किया। पश्चात् सभी ने गुरुवर आचार्यश्री आर्जवसागरजी को पडगाहन पूर्वक आहारदान दिया। तदुपरान्त दोपहर में 2:00 बजे सभी दीक्षार्थी पूरे आचार्य संघ के साथ देव दर्शन के पश्चात् गाजे-बाजे के साथ दशहरा मैदान पहुँचे। विशाल पाण्डाल के बीच बने विस्तृत मंच पर सभी आसीन हुये। दीक्षार्थियों को यथा स्थान बिठाया गया। अशोकागार्डन पाठशाला की शिक्षिकाओं द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। पश्चात् जबलपुर गुरुकुल से ब्र. महेश भैया आदि व ईसरी से ब्र.पंकज और इंदौर भोपाल आदि से पधारे ब्रह्मचारी भैयाओं व बहिनों ने आचार्यश्री के चरणों में श्रीफल भेंटकर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। मंच संचालन ब्र. रवीन्द्र भैया ने किया। पश्चात् चित्र अनावरण अशोकागार्डन कमेटी द्वारा किया गया तथा अन्य मन्दिरों के अध्यक्षों द्वारा दीपप्रज्वलन किया गया। तदुपरान्त आचार्यश्री के पादप्रक्षालन का सौभाग्य श्री बुधराज कासलीवाल पाण्डिचेरी वालों को प्राप्त हुआ, शास्त्र भेंट किया गया। तदुपरान्त बा.ब्र. पंकज भैयाजी ईसरी ने दीक्षार्थियों का परिचय दिया। पश्चात् प्रत्येक दीक्षार्थी ने आचार्यश्री को श्रीफल भेंट कर अपनी भावना व्यक्त की।

मुनि दीक्षा संस्कार हेतु आचार्यश्री खड़े हुए तो पंडाल जयकारों से गूंज उठा। दीक्षार्थियों पर गंधोदक से शुद्धि करके केशलोंच की क्रियायें सम्पन्न कीं। पश्चात् अन्य क्रियायें वस्त्र विमोचन के साथ होती हैं। दीक्षार्थियों को खड़े होने और वस्त्राभरण त्याग करने की आज्ञा दी। चार दीक्षार्थियों ने तो पूर्ण वस्त्राभूषण त्याग कर फेंक दिये पाँचवे दीक्षार्थी ने लंगोट मात्र धारण किया। पश्चात् उनके सिर पर श्रीकार बनाया और हाथों पर अंकों का लेखन किया फिर उनके परिवार वालों से चावल, फलादि से अंजुली भरवाई गई। पश्चात् गुरुवर ने पंच महाव्रतों का 28 मूलगुणों का उपदेश दिया। पश्चात् दीक्षार्थियों द्वारा हाथों का द्रव्य परिवार वालों को दिया गया। तदुपरान्त गुरुवर ने लवंग के माध्यम से मुनि के षोडश संस्कार की क्रियायें एक-एक दीक्षार्थियों पर सम्पन्न कर चारों को मुनि बनाया। दीक्षार्थियों ने गुरुवर के चरण स्पर्श कर अपने-आपको धन्य माना। अन्तिम दीक्षार्थी पर 11 प्रतिमाओं का संस्कार कर ऐलक दीक्षा दी गई। पश्चात् मुनियों का नामकरण करते हुए पहले

दीक्षार्थी का मुनिश्री 108 विलोकसागरजी, द्वितीय मुनिश्री विशोधसागरजी, तृतीय मुनिश्री विबोध सागरजी, चतुर्थ मुनिश्री विदितसागरजी और अंतिम ऐलकश्री 105 वर्धनसागरजी नाम रखा गया। नाम सुनते पूरे पांडाल की जनता हर्षित होकर जयकारा लगाने लगी। पश्चात् उनको पिच्छिका व कमण्डल प्रदान किया गया तथा शास्त्र भी प्रदान किये गये। इस अनुपम दृश्य को देखने के लिए दूर-दूर से दिल्ली, कर्नाटक, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, सूरत, झारखण्ड, दमोह, सागर, बण्डा, इन्दौर, जबलपुर, आदि-आदि स्थानों से लोगों ने आकर अपना परम सौभाग्य माना और भोपाल में उपनगरों से भी अत्यधिक संख्या में लोगों ने उपस्थित होकर भोपाल के इतिहास में पंच परमेष्ठी रूप में पाँच दीक्षाओं का दृश्य देखने दौड़े-दौड़े आये। इतना बड़ा दशहरा मैदान का स्थान में विशाल पाण्डाल भी छोटा पड़ने लगा। इस प्रकार यह कंकर से शंकर बनाने वाली दीक्षा के कार्यक्रम में भोपाल का एक महा इतिहास का रूप लिया। पश्चात् सभी मुनिराजों ने अशोकागार्डन मन्दिर की ओर प्रस्थान किया। धन्य हैं ऐसे गुरु महाराज जिन्होंने भव्यों को परमेष्ठी भगवान की श्रेणी में ला दिया।

संयमित जीवन से होती है आत्मिक शुद्धि

-आचार्यश्री आजर्वसागरजी

अपने जीवन में संयम से होती है आत्मशुद्धि और संयम भी अहिंसा धर्म से पालन किया जाता है। हमें अहिंसा का पालन करते समय चार प्रकार की हिंसा संकल्पी, आरम्भी, उद्योगी एवं विरोधी से बचना चाहिए। अपने स्वार्थ के वश दूसरों को मारना संकल्पी हिंसा है। कृषि आदि व घर की साफ-सफाई के समय जो हिंसा होती है वह आरंभी हिंसा है। बड़े-बड़े व्यापार में बड़े-बड़े यंत्रों द्वारा जो हिंसा होती है वह उद्योगी हिंसा है तथा अपने बचाव के लिये किसी को मारना विरोधी हिंसा है। इस प्रकार चार प्रकार की हिंसा का त्याग करने तथा अपने जीवन में अहिंसा को अपनाने का उपदेश आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज ने दिया। एक कथा के माध्यम से समझाते हुए आचार्यश्री ने बताया कि जयपुर के नरेश के दीवान अमरचंद ने अपने अहिंसा के प्रभाव से एक शेर को भी जलेबी खिलाकर शाकाहारी बनाया था जिसे देखकर राजा बड़े प्रभावित होकर अहिंसक बने थे। इस प्रकार अहिंसा धर्म की महिमा बतलायी थी और बताया था कि एक शुद्ध हृदय वाले व्यक्ति में 1000 व्यक्तियों से भी बढ़कर शक्ति होती है और एक हजार विद्वानों में जितनी शक्ति होती है उतनी शक्ति एक साधु में होती है।

अत: दया धर्म का मूल है और जब तक हम हिंसा का त्याग नहीं करेंगे तब तक ऐसे मूक प्राणियों की हिंसा से संकल्पी हिंसा होती रहेगी। अत: हम सभी प्रकार की हिंसा को रोकने के लिये संकल्पित रहें।

साभार : आर्जव-वाणी

सम्यग्ज्ञान-भूषण तथा सिद्धांत-भूषण पदवी हेतु आवेदन-पत्र

मैं .... मधु (शहद), मांस, मद्य (नशा) का त्यागी, धर्म का अनुसरण करने वाला पिता/पति श्री .... जिला ....से भाव विज्ञान पत्रिका की सदस्यता प्राप्त है ☐ नहीं है ☐ सम्यग्ज्ञान-भूषण हेतु 400/- रुपये ☐ तथा सिद्धांत-भूषण हेतु 400/- रुपये ☐ प्रस्तुत है। मेरा पता :- ....जिला .... प्रदेश .... पिनकोड .... एस.टी.डी. कोड ....फोन नम्बर/ मोबाईल ....ई-मेल .... है।

दिनांक : हस्ताक्षर

कार्यालयीन उपयोग हेतु

श्री/श्रीमति .... पिता श्री .... को सम्यग्ज्ञान-भूषण एवं सिद्धांत-भूषण हेतु पंजीकृत किया जाता है।

दिनांक हस्ता. सम्पादक/प्रबन्ध सम्पादक

भाव विज्ञान पत्रिका की सदस्यता हेतु आवेदन-पत्र

मैं .... मधु (शहद), मांस, मद्य (नशा) का त्यागी, धर्म का अनुसरण करने वाला पिता/पति श्री ....निवासी.. से **भाव विज्ञान पत्रिका** शिरोमणी संरक्षक सदस्य रुपये 50,000/- से अधिक ☐ पुर्ण्याजक विशेषांक संरक्षक सदस्य रूपये 24500/- ☐ परम संरक्षक सदस्य रुपये 21000/- ☐ पुण्यार्जक संरक्षक सदस्य रुपये 18,000/- ☐ सम्मानीय संरक्षक सदस्य रुपये 11,000/- ☐ संरक्षक सदस्य रुपये 5,100/- ☐ विशेष सदस्य रुपये 3,100/- ☐ आजीवन (स्थायी) सदस्यता रुपये 1,500/- ☐ राशि देकर आजीवन सदस्यता स्वीकार करता/ करती हूँ।

मेरा पता :- ....

जिला .... प्रदेश ....पिनकोड .... एस.टी.डी. कोड ....

फोन नम्बर/ मोबाईल .... ई-मेल .... है।

दिनांक हस्ताक्षर

कार्यालयीन उपयोग हेतु

श्री/श्रीमति .... पिता श्री .... को शिरोमणी संरक्षक/पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक/परम संरक्षक/पुण्यार्जक संरक्षक/सम्मानीय संरक्षक/संरक्षक/विशेष सदस्य/आजीवन सदस्यता क्रमांक ....प्रदान की जाती है।

दिनांक हस्ता. सम्पादक/प्रबन्ध सम्पादक

नोट:- ''भाव विज्ञान'' भोपाल के पक्ष में (ड्राफ्ट अथवा) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, टी.टी. नगर, भोपाल में नेट/कोर बैंकिंग सुविधा के अंतर्गत सेविंग बैंक एकाउंट नंबर-63016576171 एवं IFS Code SBIN0030005 में नगद राशि सीधे जमा कर व रसीद प्राप्त कर प्रकाशक को रसीद की छायाप्रति प्रेषित कर सदस्यता शुल्क की रसीद प्राप्त की जा सकती है।

सदस्यता आवेदन पत्र भेजन का पता

''भाव विज्ञान'' एम-8/4, गीतांजली काम्पलैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 (म.प्र.) को प्रषित करें।

सम्पर्क : प्रधान सम्पादक-डॉ. अजित कुमार जैन - 7222963457, प्रबंध सम्पादक-डॉ. सुधीर जैन - 9425011357

भाव विज्ञान परिवार

❄❄❄❄❄ शिरोमणी संरक्षक ❄❄❄❄❄

मेसर्स आर.के. ग्रुप, मदनगंज-किशनगढ़, अजमेर, ● श्री जैन निर्मल कुमार झांझरी, डीमापुर (नागालैंड), ● श्रीमती जैन नीतिका इंजीनियर हर्ष कोछल्ल, हैदराबाद, ● डॉ. जैन संकेत शैलेष मेहता, सूरत, ● श्री जैन श्रेणिक श्रेयस बीएल पचन्ना, बैंग्लोर, ● श्री प्रवीण जैन महावीर रोडलाइन्स, दमोह, ● श्रीमती रजनी इंजीनियर महेन्द्र जैन, ● श्रीमती अनिता डॉ. (प्रो.) सुधीर जैन, ● श्रीमती नीलम राजेन्द्र जैन (एक्साइज़), भोपाल, ● श्री जैन अतुल, विपुल, कल्पेश रमेशचंद मेहता, अहमदाबाद● श्री जैन चंदूलाल राजकुमार काला, कोपरगांव।

❄❄❄❄ परम संरक्षक ❄❄❄❄

● श्री जैन गौतम काला, राँची ● श्री बुधराज जैन कासलीवाल, पांडीचेरी, ● श्री प्रेमचंद जैन कुबेर, भोपाल, ● **कटनी:** श्री पवन कुमार पंकज कुमार जैन।

❄❄❄ पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक ❄❄❄

● प्रबंधकारिणी समिति, श्री १००८ पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, कीर्तिनगर, जयपुर ● सकल दिगम्बर जैन समाज, दाँतारामगढ़, जिला सीकर ● श्री कुन्थीलाल रमेशचंद नरेश कुमार जैन गदिया, नसीराबाद (अजमेर) ● **रामगंजमण्डी :** सकल दिगम्बर जैन समाज एवं वर्षायोग समिति 2011, श्री जैन ताराचंद मित्तल परिवार एवं महेशकुमार अशोक कुमार महेन्द्र कुमार जैन ठोरा।

❄❄ पुण्यार्जक संरक्षक ❄❄

● श्री जैन नीरज सुपुत्र श्रीमती चन्द्रकला पाटनी, रांची ● सुशील कुमार, अभिषेक रोहित कुमार जैन, पांडीचेरी ● श्री मिट्ठनलाल जैन, नई दिल्ली।

❄ सम्मानीय संरक्षक ❄

● श्री वर्धमान विक्रमादित्य जैन, गोवा ● श्री जैन पदमराज होळल, दावणगेरे ● श्री जैन सोहनलाल कासलीवाल, सेलम ● श्री जैन संजय सोगानी, राँची ● श्री जैन आकाश टोंग्या, भोपाल ● श्री महावीरप्रसाद संजयकुमार जैन, इस्पात एंटरप्राईजेस प्रा.लि., कलकत्ता ● श्रीमती जैन संगीता हरीश बजाज, टीकमगढ़ ● श्रीमती कमलाबाई अशोक जैन साहबजाज, अजमेर ● श्री घनश्याम जैन, कृष्णा नगर, दिल्ली ● **जयपुर :** श्री जैन कमलजी काला, कु. इन्द्रसेना जैन ● **सूरत :** श्री नरेश जैन, (दिल्ली वाले), श्री जैन निलेशभाई शाह। ● **पथरिया (दमोह) :** श्रीमती जैन उषा पदम मलैया।

❄ संरक्षक ❄

● **रीवा:** श्री जैन विजय अजमेरा, डॉ. अश्विनी जैन ● **छतरपुर:** श्री के. सी. जैन, डि. एक्साइज अधिकारी ● श्री अजित प्रसाद जैन सराफ, रेवाड़ी ● **दिल्ली :** श्री विजयपाल जैन, शाहदरा, श्री राकेश जैन, रोहिणी ● **हस्तिनापुर (मेरठ):** श्री दिगम्बर जैन तीर्थ बड़ा मंदिर ● **गुड़गांव:** श्री संजय जैन, ● **गाजियाबाद :** श्रीमती सुषमा रवीन्द्र कुमार जैन ● **कलकत्ता:** श्री जैन कल्याणमल झांझरी ● **भोपाल:** श्रीमती सुधा महेन्द्र कुमार जैन, ● **कोटा:** श्री कस्तूरचंद सुरेश कुमार जैन, रामगंजमण्डी ● **गुवाहाटी:** श्रीमती जैन हीरामणी चांदमल सेठी ● **पांडीचेरी :** श्री जैन विमलचंद मोहित कुमार ठोलिया ● **सूरत :** श्रीमति विमला मनोहर जैन ● **जयपुर :** श्री एस.एल. जैन (बागड़िया), श्री जैन गुणसागर ठोलिया-किशनगढ़-रेनवाल, श्री जैन श्रेयांस कुमार पाटोदी, श्रीमती जैन अनिता पारस सौगानी, श्री जैन जितेन्द्र अजमेरा, श्री जैन ओम कासलीवाल, श्री जैन मंगलचंद हरकचंद मोतीलाल कमलचंद छाबड़ा, श्री विजय कुमार जैन छाबड़ा ● **उदयपुर:** श्री प्रकाशचंद जैन, श्रीमती निधी राहुल जैन-अनुपम ग्रुप ऑफ कम्पनीज, श्री जैन अशोक कुमार ड्वारा ● **इंदौर :** श्री सचिन जैन, स्मृति नगर ● **पथरिया (दमोह) :** श्री मुकेशकुमार जैन (संजय साईकिल)।

❄ विशेष सदस्य ❄

● **दमोह :** श्री मनोज जैन दाल मिल ● **अजमेर :** श्री भागचन्द जैन, नसीराबाद ● **सूरत :** श्री जैन हर्षद भाई मेहता, श्री जैन अरविंद भाई गांधी, श्री जैन संयम संदीप भाई शाह, श्री जैन रमेश मोहनलाल दौसी, श्री जैन कोठारी बाबूलाल कचरालाल, श्री जैन कन्हैयालाल कचरालाल मेहता, श्री जैन कमलेश शाह, श्री जैन हसमुख मगनलाल शाह, श्री जैन चम्पालाल लक्ष्मीलाल सिंघवी, श्री जैन नीलकेष बालू शाह मढ़ी, श्रीमती जैन सुनिता विद्या प्रकाश दीवान, श्री जैन अशोक कुमार गंगवाल खाच्छरियावास, श्रीमती जैन गुणमाला देवी दीपचंद सेठी ● **भोपाल:** श्री राजकुमार जैन, बिजली नगर ● **कटनी :** श्री शुभमकुमार सुभाषचंद जैन, ● **पन्ना :** श्री महेन्द्र जैन, पवई।

❄ नवागत सदस्य ❄

● **कांचीपुरम-** श्री जैन एस पद्मावती ● **राहतगढ़ (सागर)** -श्रीमती प्रीति संजय जैन ● **भोपाल:** श्री गजेन्द्र जैन, श्री आशुतोष मयंक जैन, श्रीमती रचना सुनील जैन, श्रीमती निरंजनी उदयचंद जैन, श्री अनिल प्रकाशचंद जैन, श्रीमती प्रमिला शिखरचंद्र जैन, डॉ.श्रीमती नीलम डॉ. मनोज जैन, श्री विपिन जैन, श्री चक्रेश जैन, इंजीनियर हेमंत जैन, श्रीमती जैन ममता सिंघई, श्री जैन पारितोष बसंत सोना मेडीकल, श्रीमती सीमा आर.के. जैन, श्री रोमेश रमेश जैन, श्री अनिल जैन, श्री आनंद जैन (टैंकर वाले), श्री सुशील जैन, श्री सुमत प्रकाश जैन-अरिहंत ज्वेलर्स ● **विदिशा-** श्री कमल अमित डॉ. आशीष जैन।

षोडसकारण व्रत करने वालों का सम्मान करते हुए अध्यक्ष सुनील जैन एवं प्रभारी मोनू जैन, भोपाल।

षोडसकारण महामण्डल विधान में भाग लेते हुए अशोकागार्डन के भक्तगण।

आचार्यश्री आर्जवसागरजी का प्रवचन सुनते हुए अशोकागार्डन में जनसमूह।

अशोकागार्डन में विमानोत्सव पर जुलूस के साथ गमन करते हुए आ.श्री आर्जवसागरजी ससंघ।

विमानोत्सव के समय आर्यिकाश्री प्रतिभामति माताजी व आर्यिकाश्री सुयोगमति माताजी।

पर्यूषणपर्व के विमानोत्सव पर सम्मान पाते हुए विधायक विश्वास सारंग।

आचार्यश्री के दर्शनार्थ पधारे पार्षद सोनू भाबा (जैन) पूर्व पार्षद तेजू जैन के साथ।

रजि. क्रं. MPHIN/2007/27127

अशोकागार्डन में 2 अक्टूबर को सम्पन्न हुए पाठशाला सम्मेलन में भाग लेते हुए विभिन्न पाठशालाओं के विद्यार्थीगण।

आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज का पाद प्रक्षालन करते हुए दीक्षार्थी भैया।

दीक्षार्थियों की बिनोली पर दर्शन लेते हुए पुलिस विभाग के अधिकारीगण।

दीक्षार्थियों को संस्कार देते हुए आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज

पिच्छी भेंट करते हुए श्रीमती सुषमा जैन धर्मपत्नि अजित जैन, भोपाल एवं लोकेश जैन दिल्ली।

पिच्छी भेंट करते हुए श्रीमती अनिता जैन धर्मपत्नि सुधीर जैन, भोपाल।

स्वामी एवं प्रकाशक : श्रीमती सुषमा जैन द्वारा मुद्रक : पवन कुमार जैन मो.:9826240876 द्वारा पारस प्रिन्टर्स, 207/4, सांईबाबा काम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं एमआईजी-8/4, गीतांजली काम्पलेक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. अजित कुमार जैन, MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 फोन : 7222963457, 9425601161